सम्पादक
हारून रशीद
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

नवम्बर, 2021 वर्ष 20 अंक 09

रब के वली

रब की महब्बत दिल में है, वह बैअ़ व तिजारत करते हैं
हुब्बे नबी में वह सरशार, नबी की ताअ़त करते हैं
ज़िक्र ख़ुदा का करते हैं, पाँचों नमाज़ें पढ़ते हैं
रोज़े रखते रमजां के, माल का हक़ वह देते हैं
क़ुदरत हुई तो ह़ज हैं करते, और ज़ियारत करते हैं
नबी के रौज़े पे जा कर, सलाम अदब से पढ़ते हैं
इल्म सीखते हुनर सीखते, हुनर से रोजी कमाते हैं
हुनर से रोज़ी कमाते हैं, हलाल ही रोज़ी खाते हैं
रब के दिये से ख़र्च हैं करते, बुख़्ल नहीं वह करते हैं
बेवा और यतीमों की, दिल से ख़िदमत करते हैं
प्यारे नबी और आल पे उनकी, पढ़ते दुरूद और ख़ूब सलाम
नबी पे पढ़ते रोज़ सलाम, बिद्अ़त से दूर ही रहते हैं
बन्दों में ऐसे ही बन्दे, रब के वली वह होते हैं
हम उनसे दुआयें लेते हैं, और उनसे महब्बत रखते हैं।

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
औलिया उल्लाह	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	09
विश्व नेतृत्व की ज़िम्मेदारी	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	11
ख़ालिक़ व मालिक के सामने	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	15
सीरते नबवी सल्ल0 का सबसे	डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी	16
इन्सानी बद आमाली के असर	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	19
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	24
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	25
ऐकता का संदेष्टा	अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह0	30
इस्लामिक विधान	मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी	33
पानी पीने के आदाब	मौलाना मुहम्मद तक़ी उस्मानी	36
अल्लाह का डर	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	39
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुअनि की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-अन्फ़ालः-

अनुवाद—

और अल्लाह और उसके पैग़म्बर की बात मानो और आपस में झगड़ा मत करना वरना तुम हिम्मत हार जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और जमे रहो बेशक अल्लाह जमने वालों के साथ है[1](46) और ऐसों की तरह मत हो जाना जो अपने घरों से इतराते हुए और लोगों को दिखाते हुए निकले और अल्लाह के रास्ते से रोकते थे जब कि अल्लाह उनके सब कामों को अपने घेरे में लिए हुए है[2](47) और जब शैतान ने उनके लिए उनके कामों को सुन्दर बना दिया और बोला कि आज के दिन तुम पर कोई ग़ालिब (प्रभावी) न होगा और मैं तो तुम्हारे साथ ही हूँ फिर जब दोनों सेनायें आमने सामने हुईं तो वह उलटे पाँव भागा और बोला मेरा तुम से कोई संबंध नहीं मैं वह देख रहा हूँ जो तुम नहीं देखते मुझे तो अल्लाह से डर लग रहा है और अल्लाह की सज़ा बड़ी कठोर है[3](48) जब मुनाफिक़ और दिल के रोगी कहने लगे उनको तो उनके दीन ने धोखे में डाल रखा है, और जो अल्लाह पर भरोसा करता है तो बेशक अल्लाह ज़बरदस्त है हिकमत वाला है[4](49) और अगर आप देख लें जब फरिश्ते काफिरों की जान निकाल रहे हों उनके चेहरों और पीठ पर मारते जाते हों और (कहते जाते हों) कि जलने के अज़ाब का मज़ा चखो(50) यह फल है तुम्हारी गुज़री हुई करतूतों का और अल्लाह अपने बन्दों पर ज़रा भी अत्याचार नहीं करता(51) फ़िरऔन वालों और उनसे पहले वालों के नियमानुसार उन्होंने अल्लाह की आयतों का इनकार किया तो अल्लाह ने उनके पापों के बदले में उनको धर पकड़ा बेशक अल्लाह बड़ी शक्ति वाला कठोर दण्ड देने वाला है[5](52) यह इसलिए कि जब अल्लाह किसी क़ौम पर इनआम करता है तो उस समय तक हरगिज़ नेअ़मत को नहीं बदलता जब तक कि वे लोग खुद अपने आपको नहीं बदल लेते और बेशक अल्लाह खूब सुनने वाला खूब जानने वाला है[6](53) फ़िरऔन वालों और उनसे पहले वालों के नियमानुसार उन्होंने अल्लाह की निशानियाँ झुठलाईं तो उनके गुनाहों के बदले में हमने उनको विनष्ट (हलाक़) कर दिया और फ़िरऔन के लावलश्कर को हमने डुबो दिया और वे सब अत्याचारी थे(54) अल्लाह के यहां जीवों में सबसे बुरे वे लोग हैं जिन्होंने इनकार किया फिर वे मानते ही नहीं (55) जिनसे आपने समझौता किया फिर वे हर बार अपने समझौते तोड़ ही डालते हैं और वे डरते ही नहीं(56) तो अगर कभी आप उनको जंग में पा जाएं तो ऐसी सज़ा दें कि देख कर उनके पिछले भी भागें शायद वे शिक्षा प्राप्त करें[7](57) और अगर आपको किसी क़ौम से धोखे का डर हो तो आप भी

उनको बराबर का जवाब दीजिए बेशक अल्लाह धोखेबाज़ों को पसंद नहीं करता(58) और काफ़िर हरगिज़ यह न समझें कि वे भाग निकले वे विवश न कर सकेंगे[8](59) और उनके लिए शक्ति से और घोड़े पाल कर हर संभव तैयारी करो कि इससे अल्लाह के दुश्मनों और अपने दुश्मनों पर धाक बैठा सको और उनके अलावा दूसरों पर भी जिनको तुम नहीं जानते अल्लाह उनको जानता है[9] और अल्लाह के रास्ते में तुम जो भी खर्च करोगे वह तुम्हें पूरा पूरा मिल जाएगा और तुम्हारे साथ कुछ भी अन्याय न होगा[10](60) और अगर वे सुलह के लिए झुक जाएं तो आप भी उसके लिए झुक जाएं और अल्लाह पर भरोसा रखें बेशक वह खूब सुनता जानता है(61)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. सबसे बड़ी शक्ति ईमान व एकता में है, इसकी और धैर्य व अडिगता की ताकीद की जा रही है जिसमें सहाबा खरे उतरे।

2. अबू जहल सेना ले कर बहुत धूम–धाम और बाजे गाजे के साथ निकला था, अबू सुफ़ियान ने कहलवाया था कि काफ़िला ख़तरे से निकल गया है तुम वापस चले जाओ तो उसने बड़े घमण्ड के साथ कहा कि अब तो हम बद्र में मौज मस्ती की सभा आयोजित करेंगे और अपनी शक्ति का प्रदर्शन करेंगे ताकि मुसलमानों का साहस टूट जाए।

3. कुरैश की किनाना कबीले के साथ छेड़–छाड़ रहा करती थी इसलिए उनकी ओर से कुछ खतरा था, इबलीस किनाना के सरदार सुराका पुत्र मालिक के रूप में आया और बोला कि हम सब तुम्हारे साथ हैं निश्चिंत रहो, फिर जब घमासान की जंग छिड़ गई और शैतान को फरिश्ते नज़र आने लगे तो वह भागने लगा, अबू जहल ने कहा धोखा दे कर कहां भागे जाते हो बोला कि मुझे वह नज़र आ रहा है जो तुम्हें नज़र नहीं आता, मुझे तो अल्लाह से डर लग रहा है, क़तादा कहते हैं कि उसने झूठ बोला उसके दिल में खुदा का डर न था हाँ वह जानता था कि अब कुरैश की सेना को कोई शक्ति नहीं बचा सकती इसलिए ठीक समय पर धोखा दे कर भाग गया बाद में मुश्रिकों ने जब सुराक़ा से पूछा तो उसने कहा कि मुझे तो खुद भी नहीं मालूम।

4. मुसलमानों का निहत्था होना और फिर उनके साहस को देख कर मुनाफ़िक़ कहने लगे कि उनको अपने धर्म पर घमण्ड है उसका उत्तर दिया जा रहा है कि यह घमण्ड नहीं, अल्लाह पर भरोसा है।

5. हमेशा से यही नियम रहा है कि जब लोग नबियों को झुठलाने पर ही अड़िग रहे तो पकड़े गए।

6. यानी जब लोग अपने असंतुलन और बुरे कर्मों से भलाई की प्राकृतिक योग्यताओं को बदल डालते हैं और अल्लाह की दी हुई नेअ़मतों का दुरुपयोग करने लगते हैं तो अल्लाह तआला भी अपनी नेअ़मतें उनसे छीन लेता है, यही नियम पिछली क़ौमों के साथ रहा है।

7. जो लोग हमेशा के लिए कुफ़्र पर तुल गये हैं और छल और विश्वासघात करते रहते हैं वे अल्लाह के यहां सबसे बुरे जीव हैं, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में यहूदियों का यही हाल था, समझौता करते थे और

शेष पृष्ठ ...08..पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

शगुनऔर रमल का बयानः—

हज़रत मुआविया बिन हकम रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज किया या रसूलुल्लाह मुझे इस्लाम लाये हुए थोड़ा जमाना गुज़रा है अब अल्लाह तआ़ला के फज्ल से इस्लाम काल है लेकिन अभी हम में कुछ लोग ऐसे हैं जो काहिनों के पास जाते हैं, आपने फरमाया तुम न जाना, मैंने अर्ज किया कुछ लोग ऐसे भी हैं जो शगुन लेते हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया यह एक चीज है जिसको वह लोग अपने दिल में पाते हैं तो उनको चाहिए कि यह ख्याल उनको काम से न रोके, मैंने अर्ज किया कुछ लोग ऐसे भी हैं जो खत (लकीर) खींचते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया एक नबी लकीर खींचते थे तो अगर लोगों का खत उनके खत के मुवाफिक है तो ठीक है।

(मुस्लिम)

तीन हराम चीज़ेंः—

हज़रत अबू मसऊद बद्री रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुत्ते की कीमत, और दुष्कर्म की उजरत (मजदूरी) और काहिन की शीरीनी (चढ़ावे) की मुमानियत फरमाई है।

(बुखारी—मुस्लिम)

नेक फाल लेने का आदेशः—

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ना मुतअद्दी (संक्रमण रोग) कोई चीज़ है न शगुन , हाँ फाल मुझे पसंद है, लोगों ने अर्ज किया फाल क्या चीज़ है आपने फरमाया फाल एक अच्छा कलिमा है।

(बुखारी—मुस्लिम)

छुवा छूत कोई चीज़ नहींः—

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया बीमारी लग जाने की कुछ हकीकत नहीं और अशुभ शगुन लेने की भी कोई हक़ीकत नहीं, और नहूसत किसी चीज़ में हो सकती है तो घर, औरत, और घोड़े में हो सकती है।

(बुखारी—मुस्लिम)

अर्थात घर की नहूसत तंगी और पड़ोसियों की खराबी है। औरत की नहूसत दुर्व्यवहार व बेदीनी है। घोड़े की नहूसत सवार को बैठने न देना और शरारत करना है।

हज़रत बुरैदा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने शगुन का जिक्र किया गया, आपने फरमाया सब से अच्छी चीज़ फाल है उससे कामिल मुसलमान के इरादे को लड़खड़ाहट नहीं होती, और जब तुम कोई नागवार बात देखो तो कहोः अनुवाद— ''ऐ अल्लाह तेरे अलावा कोई भलाई लाने वाला नहीं, और तेरे अलावा कोई बुराई को दूर करने वाला नहीं, और तेरे अलावा न किसी में ताक़त है न कुव्वत''।

(अबू दाऊद)

फोटो ग्राफर की सजाः–

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो लोग तस्वीरें बनाते हैं उन पर कयामत में अजाब होगा और उनसे कहा जायेगा कि उन तस्वीरों में जान डालो।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी सफर से तशरीफ लाये और मैंने दरवाजे पर एक पर्दा डाल रखा था जिसमें तस्वीरें थीं जब आप की नजर उस पर्दे पर पड़ी तो आप के चेहर–ए–मुबारक का रंग बदल गया और फरमाया ऐ आयशा कयामत में सबसे जियादा अ़ज़ाब उनको होगा जो अल्लाह की पैदा की हुई चीज में नकल उतारना चाहते हैं, तो हमने उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये और एक या दो तकिये बनाये।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है फरमाते थे कि फोटोग्राफर आग में डाला जायेगा और जितनी तस्वीरें उसने बनाई हैं उन सब में जान डाल दी जायेगी वह उस पर अजाब करेंगी हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 कहते हैं कि अगर तस्वीरें बनाना जरूरी समझो तो बेजान चीजों की तस्वीरें बनाओ जैसे पेड़ वगैरह।

(बुखारी–मुस्लिम)

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

कुर्आन की शिक्षा .....

तोड़ते थे, ऐसे लोगों के बारे में कहा जा रहा है कि जब वे समझौता तोड़ कर मुकाबले पर आ जाएं तो उनको ऐसी सख़्त सज़ा दी जाए कि उनकी पीढ़ियाँ याद रखें, आगे बताया जा रहा है कि अगर किसी क़ौम के बारे में आपको धोखे का डर हो तो आप चाहें तो समझौता समाप्त कर दें और उनको इसकी सूचना दे दें। ताकि विश्वासघात की कोई घटना न हो।

8. यानी काफ़िर यह न समझें कि जब मुसलमानों के यहां धोखा और विश्वासघात वैध नहीं तो हम खूब तैयारी कर लेंगे और मुसलमानों से जीत जाएंगे।

9. मुसलमानों को आदेश हैं कि जहाँ तक हो सके वे जिहाद के साधन उपलब्ध करें और हर युग के अनुसार शक्ति व बल प्राप्त करने के जो साधन हैं वह अपनाएं और उस पर जो हो सके ख़र्च करें वह पूरा अल्लाह के यहां जमा हो जाएगा फिर आगे कहा जा रहा है कि अगर वे मुसलमानों की शक्ति देख कर सुलह पर तैयार हों तो आप भी सुलह कर लें और उनके दिलों के हाल को अल्लाह के हवाले करके उसी पर भरोसा करें।

10. इससे मतलब मुसलमानों के वे दुश्मन हैं जो उस समय सामने नहीं आये थे, बाद में सामने आए जैसे रोम व ईरान के लोग। ◆◇◆

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

अनुरोध

अगर आपको "सच्चा राही"की सेवाएं पसन्द हों तो आप से अनुरोध है कि "सच्चा राही" के नये ग्राहक बनाने का प्रयास करें, अल्लाह आपको अज्र देगा और हम आपके आभारी होंगे।

(संपादक)

औलिया उल्लाह (रब के मित्र)

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं, अल्लाह से महब्बत रखते हैं अल्लाह से डरते हैं, गुनाहों से बचते हैं, शरीअ़त पर चलते हैं वह अल्लाह के वली होते हैं कुर्आन मजीद में उनका ज़िक्र जगह जगह आया है, सूरह यूनुस आयत नं0 62,63, 64 में यूँ बताया गया है।

तर्जुमाः—

सुन रखो जो लोग खुदा के दोस्त हैं उन पर न किसी क़िस्म का ख़ौफ है और न वह ग़मगीन होंगे। यह वह लोग हैं जो ईमान लाये और परहेज़गार रहे उनके लिए दुन्या की ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में भी बशारत व ख़ुशख़बरी है, अल्लाह की बातें बदला नहीं करतीं, यह बशारत ही तो बहुत बड़ी कामयाबी है।''

(सूरः यूनुस—62,63,64)

सूरह बक़रा आयन नं0 256 और 257 में इस तरह आया है।

तर्जुमाः—

यक़ीनन हिदायत की राह गुमराही से नुमायां और मुम्ताज़ हो चुकी है सो जिस शख़्स ने तमाम माबूदाने बातिल का इंकार किया और अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाया तो उसने एक ऐसा ह़ल्क़ा पकड़ लिया जिसको कभी टूटना नहीं, और अल्लाह खूब सुनने वाला जानने वाला है, अल्लाह तआ़ला उन लोगों का साथी और मददगार है जो अहले ईमान हैं उनको तारीकियों से निकाल कर रोशनी की तरफ़ लाता है।''

(सूरः अल बक़रा—256—259)

सूरह अनफाल में औलिया उल्लाह का ज़िक्र इस तरह आया है।

तर्जुमाः—

''बस ईमान वाले तो वही हैं कि जब खुदा का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल डर जाते हैं और जब खुदा की आयतें उनको पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो वह आयतें उनके ईमान को वह बहुत मज़बूत कर देती हैं और वह अपने रब ही पर भरोसा करते हैं, वह ऐसे हैं जो नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और हमारे दिये में से कुछ ख़र्च भी किया करते हैं वही लोग सच्चे ईमान वाले हैं, उनके लिए उनके रब के यहां बड़े बड़े दर्जे हैं और मग़फिरत है और इज़्ज़त की रोजी है।''

(सूरह अनफाल आयत नं0 2,3,4)

सूरह मोमिनून में औलिया उल्लाह का तआ़रूफ इस तरह कराया गया है।

तर्जुमाः—

यक़ीनन वह ईमान वाले कामयाब हो गये, जो अपनी नमाज़ में इज़हारे इज़्ज़ व नियाज़ करने वाले हैं, और वह जो बेकार और लग़्व बातों से ऐराज़ करते हैं, और वह जो ज़कात अदा करते हैं, और जो अपने गुप्तांगों की हिफाज़त करने वाले हैं, अलावा अपनी बीवियों से या अपने हाथ के माल यानी बांदियों से तो उन लोगों पर कोई इलज़ाम नहीं। फिर जो कोई उन बीवियों या बांदियों के अलावा कोई और राह तलाश करे तो यही लोग हद से तजावुज़ करने वाले हैं और वह जो अपने पास रखी हुई अमानतों की और अपने अ़हेद की निगहदाश्त करने वाले हैं और वह जो अपनी नमाज़ों की पाबन्दी करने वाले हैं यही लोग वारिस होने वाले हैं, जो जन्नतुल फिरदौस की मीरास पायेंगे वह उस फिरदौस में हमेशा रहेंगे।

(सूरह मोमिनूनः 1—11)

सूरः हा–मीम सजदा में औलिया उल्लाह का ज़िक्र इस तरह आया है।

तर्जुमाः–

बिला शुबह जिन लोगों ने इस बात का इक़रार किया कि हमारा रब अल्लाह है फिर इस पर क़ाइम रहे तो ऐसे लोगों पर फरिश्ते उतरते हैं कि तुम न किसी बात से डरो और न तुम किसी तरह ग़मगीन हो और तुम उस जन्नत के हुसूल पर ख़ुश हो जिसका तुमसे वादा किया गया था, दुन्या की ज़िन्दगी में भी हम तुम्हारे रफीक़ थे और आख़िरत में भी तुम्हारे रफीक़ रहेंगे, और जन्नत में तुम्हारे लिए हर वह चीज़ मौजूद होगी जिसकी तुम्हारा दिल ख़्वाहिश करेगा और जो तुम वहां तलब करोगे वह तुम को मिलेगा, यह सब कुछ उसकी तरफ से बतौरे मेहमानी के होगा जो बहुत बख़शने वाला निहायत मेहरबान है।

(सूरह हा–मीम सजदः 30–32)

सूरह नूर में औलिया उल्लाह का ज़िक्र इस तरह आया है–

तर्जुमाः–

जिन लोगों को अल्लाह की याद से और नमाज़ पढ़ने से और ज़कात देने से न किसी क़िस्म की ख़रीद ग़ाफिल कर सकती है न किसी क़िस्म की फरोख़्त, वह लोग एक ऐसे दिन से डरते रहते हैं जिस दिन बहुत से दिल पलट जायेंगे और बहुत सी आखें उलट जायेंगी, उन लोगों के उन नेक कामों का अंजाम यह होगा कि ख़ुदा उनको उनके आमाल का अच्छे से अच्छा सिला देगा और अपने फज़्ल से उनको और ज़ियादा भी देगा और अल्लाह तआ़ला जिस को चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है। और जो लोग काफिर हैं उनके आमाल ऐसे हैं जैसे चटियल मैदान में चमकता हुआ रेत, कि प्यासा उसको दूर से पानी समझता है, यहां तक कि जब वह उस पानी के पास आया तो उसको कुछ भी न पाया और वहां पहुंच कर अपने पास ख़ुदा को हिसाब लेने के लिए मौजूद पाया, सो अल्लाह ने उसका पूरा पूरा हिसाब उसको चुका दिया, और अल्लाह बहुत जल्द हिसाब कर देने वाला है।

(सूरह नूरः 37 ,38,39)

सूरह सज्दा में औलिया उल्लाह का तआरुफ़ इस तरह कराया गया है और आख़िरत में नाफरमानों की सज़ा का जिक्र भी आ गया है–

तर्जुमाः–

हमारी आयतों पर तो बस वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उनको इन आयतों के ज़रिये नसीहत की जाती है तो वह सजदे में गिर पड़ते हैं अपने रब की हम्द के साथ पाकी बयान करने लगते हैं और वह लोग तकब्बुर नहीं करते, उनके पहलू अपनी ख़्वाबगाहों से इस तौर से अलाहिदा रहते हैं कि वह अपने रब को डर से और उम्मीद से पुकारते रहते हैं और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से ख़ैरात किया करते हैं। सो ऐसे लोगों के लिए आँखों की ठण्डक का जो सामान ख़ज़ानए ग़ैब में मौजूद है उसकी किसी शख़्स को भी ख़बर नहीं, वहाँ उनको उन आमाल का सिला मिलेगा जो वह किया करते थे। क्या भला वह शख़्स जो ईमानदार है, उस शख़्स के बराबर हो सकता है जो नाफ़रमान है, दोनों फरीक़ नहीं बराबर हो सकते। सो जो लोग ईमान लाये और नेक आमाल करते रहे तो उनका ठिकाना जन्नतें हैं, यह जन्नतें उनके उन आमाल के बदले में बतौरे मेहमानी के हैं जो वह किया करते थे और जो लोग नाफरमान रहे तो उनका ठिकाना दोज़ख है वह लोग जब कभी भी उस दोज़ख़ से बाहर निकलना चाहेंगे तो उसी में फिर लौटा दिये

शेष पृष्ठ ...23..पर

विश्व नेतृत्व की ज़िम्मेदारी मुस्लिम उम्मत पर

–हज़रत मौलाना सै0 अबुल हसन अली नदवी (रह0) –अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

मानव इतिहास, मनो–विज्ञान और आचार शास्त्र जिन बातों का समर्थन करते हैं उनमें एक बात यह भी है कि उच्चतम लक्ष्य, शालीन शिक्षा और व्यवहार के उच्चतम आदर्श उस समय तक स्थापित नहीं हो सकते और यदि स्थापित भी हो जायें तो बाक़ी नहीं रह सकते, जब तक कि उनके पीछे एक जन समुदाय न हो जो उस आह्वान व आन्दोलन का समर्थक, उसके रास्ते में संघर्ष करने वाला और उसका व्यावहारिक नमूना हो।

इसीलिए हम देखते हैं कि कुछ नबियों की शिक्षायें भी इस कारण अधिक समय तक बाक़ी नहीं रहीं कि उनके पीछे कोई उम्मत न थी, जो उनके सन्देश की ज़िम्मेदारी संभालती, उसके लिए त्याग करती और अपने जीवन, अपनी सभ्यता, समाज और शासन के ज़रिये उनका व्यावहारिक आदर्श प्रस्तुत करती। फलतः जिन इलाक़ों में वह भेजे गये थे वहां का जनजीवन एक ऐसे बहते हुए पानी की तरह बन कर रह गया जिसका तल एक होता है। और वह क़ौमें व क़बीले जानवरों के झुण्ड की तरह हो गये जिनका कोई रखवाला व चरवाहा न हो।

जब अल्लाह ने यह फ़ैसला फ़रमाया कि मोहम्मद सल्ल0 अन्तिम रसूल (ईशदूत) हों और आप के बाद न कोई नबी आये और न कोई और आसमानी किताब नाज़िल (अवतरित) हो, तो इस प्रकार अल्लाह ने मानवता को इस ख़तरे से सुरक्षित कर दिया और मोहम्मद सल्ल0 के साथ एक पूरी उम्मत का भी अभ्युदय हुआ। इस प्रकार मुहम्मद सल्ल0 के अभ्युदय के साथ उम्मत का अभ्युदय भी शामिल था। कुरआन में इरशाद होता हैः–

अनुवादः– *''तुम लोग उत्तम समुदाय हो और तुमको लोगों के लिए पैदा किया गया है। तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान लाते हो।''*

(सूरः आले इमरानः 110)

अनुवादः– *''और इसी तरह हमने तुम को एक दरमियानी (बेहतर) उम्मत बनाया है ताकि लोगों पर तुम गवाह रहो और तुम पर पैग़म्बर गवाह रहें।'' (सूरः बकराः 143)*

हदीस में भी इसी प्रकार के शब्द आये हैं।'' अल्लाह के रसूल मोहम्मद सल्ल0 ने सहाबा के एक गिरोह से फ़रमायाः–

अनुवादः– *''तुम आसानी पैदा करने वाले बनाकर भेजे गये हो न कि तंगी पैदा करने वाले''।*

इस ज़िम्मेदारी की एक झलक सय्यदुना रिबई बिन आमिर के उन वाक्यों में मिलती है जो उन्होंने सय्यदुना साद बिन अबी वक्क़ास के दूत की हैसियत से ईरानी सेनापति रुस्तम से अपने आने का कारण बताते हुए कहा था। रिबई बिन आमिर ने कहाः–

अनुवादः– *''अल्लाह ने हमें इसलिए भेजा है कि जिसको*

वह चाहें बन्दों की बन्दगी से निकाल कर एक ख़ुदा की बन्दगी (भक्ति) पर आमादा करें और दुन्या की तंगी से उसकी विशालता की ओर और धर्मों के अत्याचार से बचा कर इस्लाम के न्याय की छाया में लायें''।

इस दृष्टिकोण ने मानवता के भविष्य को बहुत प्रभावित किया। धर्मों के इतिहास में यह एक नया प्रयोग था जिसने इतिहास में एक क्रान्ति पैदा कर दी क्योंकि छठी शताब्दी ईस्वी की दशा ऐसी न थी कि इसे कुछ एक भले लोग प्रभावित कर पाते। कुरआन कहता हैः–

अनुवादः– *''यह किताब वाले भी सब एक से नहीं हैं। कुछ लोग ऐसे हैं जो (अल्लाह के हुक्म पर) क़ायम हैं, और रातों में अल्लाह की आयतें पढ़ते और सज्दा करते हैं। यह अल्लाह और क़यामत के दिन पर ईमान रखते हैं और भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं। और अच्छी बातों की तरफ़ दौड़ पड़ते हैं। यही नेक लोगों में से हैं।'' (सूरः आले इमरान–113–114)*

किन्तु इन नेक (शालीन) लोगों का समाज पर कोई असर न था क्योंकि वह केवल कुछ लोग थे और क़ौमें कुछ एक व्यक्तियों का असर नहीं लेतीं। प्रत्येक युग में ऐसे नेक लोग रहे हैं जो अपने व्यवहार, आचरण और अपनी उपासना में दूसरे लोगों से विशिष्ट होते हैं। लेकिन किसी क़ौम (नेशन) नस्ल और समाज की ख़राबी तब तक दूर नहीं हो सकती जब तक कि सुधार, भलाई और व्यवहार का नमूना भी समाज के स्तर का न हो। भलाई की ओर बुलाने वाले कुछ लोग नहीं बल्कि एक समुदाय और समाज हों। ऐसा समाज, ऐसी उम्मत, जो नबी की उच्च शिक्षा, सद्व्यवहार, व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन, व्यक्ति और समुदाय के साथ बर्ताव, क़ौमों और हुकूमतों के साथ व्यवहार, सहमति व असहमति, सुलह व लड़ाई, ग़रीबी व अमीरी प्रत्येक दशा में करता हो।

सहाबा (मोहम्मद सल्ल0 के साथी) और वह लोग जिन्होंने नबी के सानिध्य में रह कर शिक्षा–दीक्षा पायी थी, ईमान व कुरआन का जिन्होंने पाठ पढ़ा और याद किया था, उनमें यही लक्षण और गुण पाये जाते थे।

एक न्याय प्रिय विद्वान ने, जिसकी विश्व इतिहास पर गहरी नज़र है, इस वर्ग का बड़ा अच्छा चित्रण किया है। जर्मन विद्वान 'कायतानी' *(Caetani)* ने अपनी पुस्तक *(Annali del'islam (Vol. II p. 429* जिसका उद्धरण *T.W. Arnold* ने *Preaching of Islam (London 1925 p.41-42)* में प्रस्तुत किया है, लिखा है किः–

''यह लोग मोहम्मद सल्ल0 की नैतिक विरासत के सच्चे प्रतिनिधि, भविष्य में इस्लाम के प्रचारक, और मोहम्मद सल्ल0 ने ख़ुदा से डरने वाले लोगों तक जो शिक्षा पहुंचाई थी अमीन (अमानतदार) थे। अल्लाह के रसूल मोहम्मद सल्ल0 के सानिध्य और उनके प्रेम ने इन लोगों को अनुभूति की एक ऐसी दुन्या में पहुंचा दिया था जिससे उत्कृष्ट और सभ्य वातावरण किसी ने देखा नहीं था।

वास्तव में इन लोगों में हर प्रकार से उत्कृष्ट परिवर्तन

हुआ था और आगे चल कर उन्होंने युद्ध के अवसरों पर कठिनतम परिस्थितियों में सिद्ध कर दिया कि मोहम्मद सल्ल0 के विचारों का बीजारोपण उपजाऊ धरती में किया गया था, जिससे उत्कृष्ट क्षमताओं वाले मनुष्यों ने जन्म लिया। वह लोग पवित्र कुरआन के रसूल मोहम्मद सल्ल0 से जो शब्द या हुक्म उन्हें पहुंचा था उसके ज़बरदस्त रक्षक थे।

यह थे इस्लाम के सम्मान के पात्र प्रतिनिधि जिन्होंने मुस्लिम सोसाईटी के प्रारम्भिक फ़ुक़हा, उलमा और मुहद्दिसीन को जन्म दिया।

इस्लामी उम्मत पर दुन्या की देख रेख, आचरण व विचार धारा, व्यक्तिगत तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार के लेखा जोखा, न्याय की स्थापना, सत्य के समर्थन, अच्छी बातों का हुक्म करने और बुरी बातों से मना करने की ज़िम्मेदारी डाली गई है। और उसे क़यामत के दिन इस ज़िम्मेदारी की अदायगी में कोताही पर उत्तरदायी बनाया गया है:–

अनुवादः– *''ऐ ईमान वालो! अल्लाह के वास्ते इन्साफ़ के साथ गवाही देने को तैयार रहा करो और किसी गिरोह की दुश्मनी तुम्हें इस पर आमादा न करे कि तुम (उसके साथ) इन्साफ ही न करो इन्साफ़ करते रहो कि वह तक़वा से बहुत क़रीब है, और अल्लाह से डरते रहो। बेशक अल्लाह को इसकी पूरी ख़बर है कि तुम क्या करते रहते हो।''*

(सूरः माइदा–8)

इस उम्मत को अपने कर्तव्यों के निर्वाह में कोताही न करने हेतु सचेत किया गया है। क्योंकि यदि उसने अपने कर्तव्यों के प्रति उदासीनता दिखाई तो इसके फलस्वरूप मानवता मुसीबत और कठिनाई में फंस सकती है और भू–तल पर अव्यवस्था फैल सकती है। अतएव उस छोटे से जन समुदाय को (जो मदीना में था) सम्बोधित करते हुए फ़रमाया गयाः–

अनुवादः– *''अगर यह न करोगे तो ज़मीन में बड़ा फ़ितना और फ़साद फैल जायेगा।''*

(सूरः अन्फ़ाल–73)

फिर क्या आज की इस्लामी मिल्लत के लिए यह बात नहीं, जो बड़ी–बड़ी हुकूमतें रखती हैं? जब वह नेतृत्व से हट कर अपना गरिमापूर्ण पद छोड़ देगी और अपनी ज़िम्मेदारी से मुँह मोड़ लेगी तो दुन्या पर इस बड़ी कोताही (उदासीनता) और ख़तरनाक ग़ल्ती का क्या प्रभाव पड़ेगा?

कुरआन इस उम्मत को उसकी अपनी गरिमा व ज़िम्मेदारी की याद, पिछली क़ौमों का हवाला देते हुए, इस प्रकार दिलाता हैः–

अनुवादः– *''तो जो गिरोह तुमसे पहले हो चुके हैं, उनमें ऐसे होश वाले क्यों न हुए कि (लोगों को) देश में फ़साद मचाने से रोकते। अलावा थोड़े से लोगों के जिनको हमने उनमें से बचा लिया था। और जो लोग (अपनी जान पर) जुल्म करने वाले थे, वह जिस ऐश में थे उसी के पीछे पड़े रहे और (आदी) मुजरिम हो गये''।*

(सूरः हूद–116)

उर्दू के विख्यात कवि डॉ0 मोहम्मद इक़बाल ने इस वास्तविकता को अपनी नज़्म ''इब्लीस की मजलिसे शूरा'' में बड़े अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है। और शैतानों के अध्यक्ष 'इब्लीस' के मुख से उस ख़तरे की ओर संकेत किया है जो मुसलमानों के अस्तित्व, उनके जागरण तथा उनकी ज़िम्मेदारी से इब्लीसी निज़ाम (शैतानी व्यवस्था) को पैदा हो सकता है। इब्लीस अपने परामर्शदाताओं से कहता है, जिसकी तकबीरों से छः दिशायें गूंजती हैं, उस अल्लाह से डरने वाले को अन्धेरे में ही रहने दो। मेरे साथियों तुम इसे विश्व का नेतृत्व करने से रोके रखो ताकि यह जीवन में सफलता न पा सके। अच्छा इसी में है कि मुसलमान क़यामत तक गुलाम बना रहे, और उसकी आँखों से जीवन की वास्तविकतायें ओझल बनी रहें। जिसके दीन (धर्म) में दुन्या का लेखा–जोखा है, मैं उस उम्मत के जागरण से हर पल डरता हूँ।''

इस प्रकार यह अनिवार्य हो जाता है कि मानव सभ्यता में प्रभाव की यह प्रक्रिया जारी रहे। और एक अन्तराल से इसका सिंहावलोकन किया जाता रहे और विनाशकारी तत्वों से बराबर इसकी सुरक्षा की जाती रहे।

इसके मुख्य रूप से दो कारण हैं, एक तो यह कि दुन्या की क़ौमें भलाई व बुराई के नये व विरोधी तत्वों के अधीन और उनसे प्रभावित होते रहते हैं और जीवन गतिशील है इसका क़ाफ़िला कहीं और ठहरता नहीं। इसलिए थोड़े अन्तराल से इसकी दिशा और गति को देखते रहना और उसकी ज़रूरतों को पूरा करते रहना अपरिहार्य होता है। दुख का विषय है कि इस युग में विनाशकारी आन्दोलनों और दर्शनशास्त्रों के प्रभाव में आकर इस्लामी मिल्लत विश्व नेतृत्व के मैदान से अलग हो कर अपने ख़ोल में बन्द हो कर रह गयी है।

दूसरा कारण यह है की इस्लामी उम्मत ही के पास आख़िरी आसमानी पैग़ाम है जिससे मानवता की आशायें बन्धी हैं। इसीलिए इसे अपने सन्देश को सीने से लगाये रखना चाहिए। और मानवता के क़ाफ़िले के नेतृत्व और दुन्या की निगरानी तथा विश्वास व आचरण और व्यक्तिगत व अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर नज़र रखनी चाहिए। क्योंकि क़ौमें केवल इतिहास के सहारे अथवा अपनी पूर्व गरिमा व कृतियों की बदौलत नहीं बल्कि निरन्तर संघर्ष, सक्रियता, अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास, हर क्षण त्याग व बलिदान के लिए आमादगी, नई–नई खोज, और अपनी उपयोगिता व क्षमता के बल पर जीवित रहती हैं। वह जब अपने पद और अपनी गरिमा को त्याग कर अलग हो जाती हैं तो इतिहास के पुराने दफ़्तर का हिस्सा बन जाती हैं और दुन्या उन्हें भुला देती है। इसलिए मुस्लिम उम्मत के लिए आवश्यक है कि वह पुनः नये सिरे से अपने लीडिंग रोल के साथ अपना सफ़र शुरु करे।

❖❖❖

ख़ालिक़ व मालिक के सामने जवाबदही का ख़्याल

—मौलाना सय्यद मु0 राबे हसनी नदवी

इन्सान की ज़िन्दगी में आमतौर पर यह बात पैदा हो जाती है कि अगर उसकी ख़राबी को देखने वाला कोई नहीं है या टोकने वाला नहीं है तो वह अपने मज़े और इनज्वाये के लिए बुरी बात इख़तियार कर लेगा, यह ऐब हमारे समाज में बढ़ता हुआ नज़र आ रहा है, इसको रोकने की बहुत ज़रूरत है इसलिए कि अगर यह ख़राबियां प्रचलित हो जायेंगी, तो इन्सान देखने में तो इन्सान नज़र आयेगा लेकिन वास्तव में वह इन्सान कहलाने के योग्य नहीं होगा, इसलिए कि इस प्रकार की ख़राबी जानवरों में तो पाई जाती है, क्योंकि उनको अच्छे बुरे का अन्तर मालूम नहीं और वह मालूम भी नहीं कर सकते, इसीलिए उनको इन्सान का अधीन बनाया गया है, इन्सान उनको चलाते हैं, लेकिन इन्सान को कुदरत की ओर से किसी मख़लूक़ (प्राणी) का अधीन नहीं बनाया गया बल्कि उसके ख़ालिक व मालिक ने उसको इल्म की सलाहियत दे कर उसको बता दिया है कि तुम ख़ुद इस बात को समझो कि तुम जानवरों से उत्तम हो, अगर तुम अपने को कन्ट्रोल में नहीं रखोगे और जानवर जैसे अख़लाक़ (चरित्र) अपना लोगे जैसा कि जानवर करते हैं, कि किसी का खाना रखा हो, फल रखे हों वह आयेगा और वह सामान खा लेगा, उसको इसका एहसास नहीं होगा कि उसको यह माल खाने का हक़ नहीं है यह दूसरे का माल है, अगर यही काम इन्सान करने लगे और कोई रोकने वाला न हो तो दूसरे का हक़ मार ले और फ़ाइदा उठा ले, और ग़लत से ग़लत काम कर ले कि कोई दूसरा रोकने वाला और मना करने वाला नहीं है और यह न सोचे कि उसके ख़ालिक़ व मालिक ने उसको इल्म की दौलत से नवाज़ा है उसको इन्सान बनाया है, अच्छे बुरे की तमीज़ दी है जिसके ज़रिये वह चीज़ों की ख़राबी को जान लेता है लेकिन फिर भी अपने स्वार्थ (नफ़े) के लिए दूसरे को तकलीफ़ पहुँचाता है और बुरा कार्य करता है, जब यह ख़राबी फैल जाती है तो पूरा समाज ख़राब हो जाता है और जब समाज में बिगाड़ पैदा हो जाता है तो फिर हर इन्सान दूसरे इन्सान से डरता है और उससे ख़तरा महसूस करता है कि जब मौक़ा मिलेगा यह हम को नुक़सान पहुंचा कर फ़ाइदा उठायेगा इससे होशियार रहो।

यह कितनी बुरी बात है कि इन्सानी समाज स्वार्थ प्रथा का समाज बन जाये, प्रत्येक आदमी अनुचित ढंग से लाभ उठाने का प्रयास करे, इसलिए हममें से हर एक की ज़िम्मेदारी है कि अपने समाज में ऐसी बात न होने दें और इसके लिए कोशिश करें कि इन्सानों में इन्सानों जैसे अख़लाक़ पैदा हों वह अपने पैदा करने वाले और मालिक के सामने जवाबदेह होने का ख्याल करें कि वह पूछेगा कि हमने तुम को समझ दी थी और ज्ञान दिया था, फिर भी तुमने अपनी ज़िन्दगी ख़राब क्यों गुज़ारी, ऐसे में हमारे पास क्या जवाब होगा? ◆◇◆

सीरते नबवी सल्ल0 का सबसे ताबनाक और अहम पहलू

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

सन् हिज्री का आगाज़ हिज़रत के उस अ़ज़ीमुश्शान तारीख़ी वाक़िये की याद ताज़ा करता है, जो तेरह साल की मुसलसल तकलीफ़ों, मशक़्क़तों और हिम्मत शिकन हालात का मुक़ाबला करने के बाद पेश आया, और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने रफीक़ सिद्दीक़े अकबर रज़ि0 को साथ ले कर मक्के से मदीने जाने के लिए तैयार हुए, अहले मक्का की दुशमनी आख़िरी हद तक पहुँच चुकी थी और वह किसी तरह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वजूद को बर्दाश्त करने के लिए तैयार न थे, इसलिए आप उनके शर्र से बचने के लिए पहले गारे सौर में चन्द दिन क़ियाम फरमाया, और उसी के दरमियान ज़ादे सफर, सवारी और रहबर का इंतिज़ाम भी फरमा लिया, और एक दिन सुब्ह को काफिला हिज़रत करके मदीने की तरफ चल पड़ा, और तारीख़े इस्लाम के इस ठहरे हुए समुन्दर में तुगयानी शुरु हो गई।

हिज़रत से पहले के तेरह साल उस बुन्यादी पत्थर की हैसियत रखते हैं, जिस के मज़बूत होने के लिए हज़ारों तूफ़ान, सैलाबों और तरह—तरह के गर्दिशों की ज़रूरत पड़ती है बुन्याद का पत्थर मज़बूत करने के लिए वक़्त और मेहनत, कुर्बानी और धैर्य सब कुछ दरकार होता है।

इसलिए जिस बुन्याद पर वक़्त, मेहनत सर्फ किए बगैर और उस पर तकलीफ़ों का बोझ डाले बगैर इमारत तामीर कर दी जाती है वह अमूमन मामूली तूफान और झटकों को बर्दाश्त करने की सलाहियत नहीं रखती और किसी अदना मुखालफत से गिर कर मुनहदिम हो जाती है, या कम अज़ कम नाकाबिले रिहाइश करार दे दी जाती है।

हिज़रत से पहले की मुद्दत दर अस्ल इस्लामी तारीख़ का वह बुन्यादी पत्थर है, जिसने हज़ारों तूफ़ानों और ज़लज़लों और तरह—तरह के झटकों को बर्दाश्त करके अपना इस्तिहकाम साबित कर लिया था और उस पर एक शानदार, इतिहास की ऊँची—से ऊँची इमारत बे ख़ौफ़ व खतर क़ाइम हो सकती थी।

हिज़रत से पहले की सख़्तियों और उन सब्र आज़्मा तकलीफ़ों के अन्दर, जिन को पैग़म्बरे इस्लाम और उनके जाँनिसार साथियों ने निहायत ख़न्दा पेशानी के साथ झेला था, उसमें एक ऐसी लाज़वाल ज़िन्दगी और एक ऐसी शानदार फ़त्ह व कमयाबी पोशीदा थी जिसको दुन्या ने इस्लामी शरीअ़त के नाम से पहचाना, जिसने देखते ही देखते पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्खिन में अपना झण्डा गाड़ दिया, और बेचैन व परेशाँ हाल दुन्या, भटकी हुई क़ौमों को सुकून व हिदायत की दौलते दवाम अता की, इंसानियत के तने मुर्दा में रूह फूँकी और इन्सानों को एक ऐसा क़ानूने फ़ितरत अता किया जो उनके तमाम मसायल का

हल था, और जिसमें उनकी सआ़दत व कामरानी का राज़ छुपा हुआ था।

हिज़रत का वाक़िआ़ उस अज़ीम तरीन कामयाबी का ऐलान था, जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने अज़ीम तरीन मक़सद में बे शुमार ख़तरात व परेशानियों को झेलने के बाद हासिल हुई थी, यह वाक़िआ़ एलान था इस बात का कि इस्लाम गालिब है और मुसलमान मुज़फ़्फ़र व मंसूर हैं, यह हक़ व बातिल की जंग में बातिल की शिकस्त और हक़ की कामयाबी का ऐलान था, यह कुफ़्र व शिर्क की पस्पाई और तौहीद व रिसालत के ग़लबे का ऐलान था, यह आवाज़–ए–हक़ की सदाक़त और शैतानी तदाबीर की नाकामी का ऐलान था, यह इंसानों की सआ़दत व फलाह और जादाए इंसानियत से दूर भागने वालों की शक़ावत व बद बख़्ती का ऐलान था, हिज़रत का वाक़िआ राहे ख़ुदा में सब कुछ कुर्बान कर देने और खुदा ही के लिए जीने और मरने का ऐलान था। यह इस बात का ऐलान था कि इंसान को खुदा की राह में सब कुछ छोड़ देने और सब कुछ नज़रअन्दाज़ कर देने के बाद सब कुछ मिल सकता है, और उससे ज़ियादा मिल सकता है जो उसने छोड़ा या नज़र अंदाज़ किया है।

हिज़रत का वाक़िआ एक मुसलमान के लिए बड़ी इब्रत व बसीरत का हामिल है, यह कामयाबी का एक नया मोड़ है, यह पूरी इन्सानियत के लिए क़यामत तक के लिए अम्न व सुकून और ऐशे दवाम का पैग़ाम है, हिज़रत इख़्लास व महब्बत, कुर्बानी व इताअ़त का वह मेयार है, जिसके बगैर ज़िन्दगी में कामयाबी की उम्मीद करना बेकार और सआदत व सुकून की उम्मीद रखना बेकार है।

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्के से मदीने की तरफ़ हिजरत फरमाई थी, लेकिन मुसलमानों की हिज़रत यह है कि वह गुनाह की ज़िन्दगी से ताअत व बंदगी की ओर हिजरत करें, वह नफ़्स और शैतान की पैरवी छोड़ कर अल्लाह और रसूल की पैरवी करें, वह बुराईयों और बद अख़्लाकियों की दुन्या से हिज़रत करके नेकियों और बलन्द अख़्लाक़ की दुन्या की तरफ आएं, उनकी हिज़रत यह नहीं है कि वह अपना आबाई वतन तर्क कर के किसी दूसरे शहर को अपना वतन बना लें, और अपने अइज्ज़ा व अक़्बा कह के दूसरे लोगों के साथ रिश्त–ए–उख़ूव्वत में मुंसलिक हो जाएं, बल्कि उनकी हिज़रत यह है कि वह ख़ुदा के दीन को मुस्तहकम बनाने, उसकी शरीअ़त को नाफिज़ करने और उसके क़ानून को राइज करने के लिए हर तरह की कुर्बानी दें, वह मुंकर को ख़त्म करने, गुनाहों को जड़ से उखाड़ने और ज़ुल्म व ना इंसाफी का खात्मा करने के लिए हर तरह की जद्दो जहद करें, और नेकी को आम करने, ख़ुदा की बंदगी को बरूयेकार लाने और अदल व इंसाफ़ को मुस्तहकम करने के लिए अपनी तमाम तवानाईयों और तमाम सलाहियतों को सर्फ करें।

हिज़रत का यही वह बुन्यादी मज़मून है, जिसके लिए यह तारीख़ वजूद में आई, और इस्लाम को फ़रोग़ हासिल हुआ,

यही तमाम इन्सानी कामयाबियों का पेश ख़ेमा है, और इससे तमाम बेक़ाबू ताक़तों पर काबू पाया जा सकता है, जो जाहिर में ना मुमकिन मालूम होता है, इस मफ़हूम को हम जितना ही ज़ियादा अपनी ज़िन्दगियों में आम करेंगे, और इज्तिमाई, तमद्दुनी, सियासी और इक़्तिसादी मुआ़मलात में उसको रहनुमा बनाएंगे, हमारी पेचीदगियाँ दूर होंगी, हमारी परेशानियों और बे इत्मीनानियों का ख़ातमा होगा, और हमारे तमाम उलझे हुए मसाइल हल होंगे।

आम तौर से हम ने हिज़रत को तारीख़े इस्लाम और दीगर वाक़िआ़त की तरह महज़ एक इत्तिफ़ाक़ी वाक़िआ समझ रखा है, हालांकि हिज़रत का वाक़िआ दर अस्ल इस्लाम की कामयाबी और उसकी सर बलन्दी का राज़ है, यह वह कुंजी है जिससे हक़ व इंसाफ का ताला खोला गया, और इंसानों के लिए एक नई ज़िन्दगी की राह मुतअ़य्यन हुई और यह ऐलान हुआ कि आप का दीन ग़ालिब आ गया, और रास्ते की सारी तारीकियाँ और दुशवारियाँ दूर हो गईं, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के झण्डे के नीचे अबू जहल व अबू लहब का परचमे कुफ़्र व ज़लालत सर निगूं हो गया, तौहीद व ईमान के सामने कुफ़्र व शिर्क की सारी ताक़तें फ़ना हो गईं, और आज से इस्लाम और सिर्फ इस्लाम इन्सानों का दीन करार पाया।

आज और तारीख़ के हर दौर में मुसलमानों की यह बड़ी सआ़दत होगी कि वह हिज़रत के वाक़िअ़े के साथ उस की तमाम ख़ुसूसियात को याद रखें, जो उसके साथ वाबस्ता हैं, और ज़िन्दगी के हर मोड़ पर उससे रोशनी हासिल करें, और हिज़रत के उस बुन्यादी मफ़हूम को हर वक़्त याद रखें, ताकि पेश आने वाले हालात का मुक़ाबला करने और मुश्किल औक़ात में अपने ऊपर काबू रखने की कुव्वत उन में मौजूद रहे, इसलिए कि एक मुसलमान की ज़िन्दगी बराबर नामुवाफ़िक़ हालात की ज़द में होती है, अगर उसमें यह ख़ुसूसियत न हो और उसकी नज़रों में वह औसाफ़ न हों जो हिज़रत के औसाफ़ समझे जाते हैं, तो वह बहुत जल्द ना मुवाफ़िक़ हालात से मर्ऊब हो कर शिकस्त खा जाता है और ज़िन्दगी को कामयाब बनाने का जज़्बा उसके अन्दर से खत्म हो जाता है।

साले हिज़री का मुबारक आगाज़ हमसे इसी बात का मुतालबा करता है, वह हम से हिज़रत के औसाफ व खुसूसियात का तालिब है, मौजूदा हालात में जो हर मुल्क के मुसलमानों को दरपेश हैं, इस बात की ज़रूरत इंतिहाई शिद्दत से महसूस होती है कि हम बार–बार सीरत के मुख़्तलिफ़ पहलुओं का जाएज़ा लेते रहें, और उसमें हम अपने लिए इबरत व अमल के नमूने तलाश करते रहें।

इस मुबारक सीरत का सबसे रौशन ताबनाक और अहम पहलू हिज़रत का वाक़िआ़ है, जो हर दौर में मुसलमानों की रहनुमाई के लिए बिल्कुल काफी और वह यकीनन नमूनए अ़मल और उस्वऐ नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है।

❖❖❖

इन्सानी बद आमाली के असर और नतीजे

—मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

इस वक्त दुन्या के जो हालात हैं लोग परेशानियों बीमारियों को झेल रहे हैं (और एक ख़ास बीमारी आई है) यह सब अल्लाह तआ़ला के यहाँ तै है हमारे बहुत से भाई कह देते हैं कि इसके करने से हो गया उसके करने से ऐसा हो गया, सही और सच्ची बात यह है कि वह अल्लाह के हुक्म से हुआ और जो कुछ भी होता है वह अल्लाह के हुक्म से होता है इस वक्त जो वबा आई पूरी दुन्या में लोग प्रभावित हुए और बहुत बड़ी संख्या में लोग मारे गये और हक़ीकत में यह एक आज़माइश है। कुर्आन पाक में अल्लाह तआला ने कई जगह इस का ज़िक्र किया है।

अनुवादः— जो भी मुसीबतें तुम्हारे ऊपर आती हैं वह तुम्हारे आमाल का नतीजा होती हैं, और अल्लाह तआला उनमें से बहुत कुछ तो माफ़ कर देता है।

(सूरः शूरा—30)

एक दूसरी ज़गह ज़िक्र है कि लागों के बद आमाली की वजह से भूमि और समुद्र में फसाद और बिगाड़ फैल गया है ताकि अल्लाह उनकी करतूतों का मज़ा चखा दे शायद वह बाज़ आ जायें। (सूरः रूम—41)

वसाइल—ए—तक़्क़ी का नुकसानः—

लोगों के आमाल दो तरह के होते हैंः—

1. टेक्नालोजी के मुतअल्लिक़ उसमें जो तरक़्क़ी करना चाहते हैं इस से बहुत सी गलतियां हो जाती हैं जिसकी वजह से दुन्या का निजाम खराब हो जाता है इनसे जान खतरे में पड़ जाती है तरह—तरह के मसायल जन्म लेते हैं आदमी सहूलतें ढूँढता है और कभी कभी इन सहूलतों के नतीजे में बड़ी बड़ी परेशानियों का शिकार हो जाता है इनसान अपनी ताक़त चाहता है लेकिन यह भूल जाता है कि इसी ताक़त का वह शिकार भी बन जाता है एक तरफ़ तो यह जाहरी आमाल हैं जिनका तअल्लुक़ दुन्या के निज़ाम से है, साइंस से है, टेक्नालोजी से है जिसमें कोताहियों की वजह से यह हालत बनी है। फैक्ट्री बनाई जा रही है, बड़े—बड़े कारखाने बनाये जा रहे हैं उसके साथ ताक़त के ज़राय इख़्तियार किये जा रहे हैं इनके जो नतीजे दुन्या को झेलने पड़ रहे हैं और आगे भी झेलने पड़ेंगे उस का तसव्वुर भी मुश्किल है।

2. बद आमालियों का नुकसान— लेकिन इससे बड़ा मामला हमारी बद आमालियों का है, बिगाड़ का एक सबब वह है जो अभी ऊपर बयान किया गया है दूसरा सबब वह है जो कुरआन करीम में अल्लाह तआ़ला ने कई जगह बयान किया है वह है हमारी बद आमालियां, अल्लाह का निज़ाम यह है कि जैसे आमाल होते हैं वैसे नतीजे आते हैं इस वक़्त बुरे आमाल के जो नतीजे हम भुगत रहे हैं वह अलग अलग शक्लों में होते हैं। बीमारियों की शक्ल में, जालिम हाकिमों की शक्ल में जो दुन्या के लिए मुसीबत बन जाते हैं।

देखिए मामला सिर्फ हमारे मुल्क का नहीं है मुस्लिम मुल्क के जो हाकिम हैं और इससे आगे बढ़ कर देखिए कि जो हमारे तुम्हारे मुक़द्दस मक़ामात हैं वहां के हाकिमों ने जो तरीक़ा इख़्तियार कर रखा है वह ऐसा

है कि उनके बाद अगर अल्लाह का अज़ाब न आये तो क्या हो इसके साथ साथ आमतौर पर हमारे आमाल के अन्दर जो बिगाड़ है वह ऐसा है कि उसके बाद जो हो रहा है उस पर कोई तअज्जुब नहीं होना चाहिए कभी लगता है कि अब बचना मुश्किल है कभी लगता है कि अब क़यामत आने वाली है, हालांकि क़यामत कब आयेगी यह तो अल्लाह ही जानता है, लेकिन हमारी बद आमालियां ऐसी हैं कि क़यामत के पहले क़यामत आ गई, क़यामत से पहले यह मुसीबतें हम पर सीधे आ रही हैं कि शायद हमारे अन्दर अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करने का कोई जज़्बा पैदा हो और हमारी ज़िन्दगी में कोई तबदीली आ जाये।

कोरोना वबा और मुसलमानों की गफ़लतः—

गौर करने की बात है कि जो नई वबा आई है लगभग डेढ़ साल से ज़ियादा समय हो रहा है उससे सारी दुन्या जूझ रही है लेकिन सब कुछ के बावजूद हमारी ज़िन्दगी में कोई तब्दीली नहीं आती, हम सब झेल रहे हैं हालात देख रहे हैं लेकिन जैसी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे उसमें कोई तब्दीली नहीं आई। हम अपनी ज़िन्दगी देख लें अपने घर वालों की ज़िन्दगी देख लें महल्ले के लोगों को देख लें, कोई तब्दीली नज़र नहीं आ रही है, बुराई कम होने के बजाय अब और बढ़ती नज़र आ रही है।

सबसे पहले इस्लाह की ज़रूरत हैः—

ऐसी हालत में इलाज करें या और कुछ करें लेकिन अल्लाह ना करे अगर हमने अस्ल सबब और मरज की इस्लाह की कोशिश नहीं की तो हमारे हालात कभी भी बेहतर नहीं हो सकते बल्कि और ज़ियादा खराब होते चले जायेंगे, यह अल्लाह की तरफ़ से एक नेअमत है कि हमें ध्यान दिलाया जा रहा है, जगाया जा रहा है हमें ऐसी मुसीबतों में डाला जा रहा है कि शायद हमारे अन्दर तब्दीली आ जाये कुरआन शरीफ में अल्लाह तआला का इरशाद है ''हम बड़े अजाब से पहले छोटे अजाब का मज़ा उनको चखायेंगे ताकि वह हमारी तरफ़ लौट आयें, मतलब हम आखिरत के अज़ाब से पहले दुन्या की मुसीबतों में डालते हैं ताकि लोग अल्लाह की तरफ़ रुजू करें। (सूरः सजदा—21)

इस हाल में अगर हमारे अन्दर पहले मरहले में इस्लाह का ज़ज्बा पैदा हो जाता है तो यह अल्लाह का बड़ा इनआ़म है कि हमारे अन्दर तब्दीली नज़र आ रही है दूसरे इसका डर है कि अल्लाह की तरफ़ से ढील न दी जाये और फिर ऐसा न हो कि हम अल्लाह के अज़ाब और आख़िरत की पकड़ से ना बच सकें, इससे पहले हमें जाइज़ा लेने की ज़रूरत है।

एहतियात की तअ़लीमातः—

हमें जो अस्बाब इख्तियार करने का हुक्म है वह हमें करना चाहिए, कुछ रिवायत और फिक़्ह की किताबों में इसका ज़िक्र भी है कि इस तरह की वबायें फैल जायें तो लोग ज़ियादा वक़्त छत के नीचे रहें फिज़ा में न घूमें ज़ियादा वक़्त अन्दर रहें बे ज़रूरत बाहर न निकलें, मुँह को कपड़े से ढक लें कानों को कपड़े से ढक लें, यह सब तदबीर इख़्तियार करनी है लेकिन यह ज़रूर समझ लें कि यह सब तदबीरें हैं, अल्लाह का जब हुक्म होता है और जो हुक्म होता है वह हो कर रहता है,

बहुत से लोग ऐसे हैं जो आखिरी हद तक एहतियात करने वाले थे लेकिन अल्लाह का हुक्म हुआ और वह बीमार हो गये और अल्लाह का हुक्म हुआ वह दुन्या से चले गये। और कुछ ऐसे भी लोग हैं जो आखरी दर्जे की बेएहतियाती करते रहे मरीज़ों की ख़िदमत में एक दो महीने तक लगे रहे, और उनको बीमारी नहीं लगी अल्लाह तआला ने दिखा दिया कि जिसे हम चाहते हैं उसे बीमार करते हैं और जिसे हम नहीं चहते हैं उसे बीमारी नहीं लगती है।

असल ज़रूरतः—

मालूम यह हुआ कि ऐसे हालात में डरना नहीं चाहिए कि बीमारी न लग जाये, हाँ अल्लाह से डरना चाहिए कि अल्लाह हमारी पकड़ न करले हमारे आमाल पर पकड़ न कर ले बीमारी से डरने की ज़रूरत नहीं है। अल्लाह से पनाह मांगने और अपने गुनाहों से तौबा करने की ज़रूरत है जिसकी वजह से यह मुसीबतें हमारे ऊपर आ रही हैं, अगर हमने अल्लाह से अपने गुनाहों की तौबा न की, अपने समाज को बदलने की कोशिश न की तो हदीस में यह साफ़—साफ़ बातें आती हैं कि जब बुराईयाँ फैल जायेंगी तो अल्लाह की तरफ़ से मुसीबतें आयेंगी ज़लज़ले आयेंगे आंधियाँ आयेंगी, तूफान आयेंगे बीमारियां आयेंगी, और हदीसों में यह भी आता है कि जब क़यामत करीब होगी तो बहुत ज़ियादा मौतें होंगी, क़यामत तो अल्लाह के फैसले के मुताबिक़ अपने वक़्त पर ही आयेगी, लेकिन जो ज़ाहरी हालात हैं उन से लगता है कि क़यामत आने वाली है, हमारे हालात ख़ुद क़यामत से कम नहीं हैं। हमें इसके लिए तैयारी करने की ज़रूरत है तौबा करने की ज़रूरत है, गुनाहों पर शर्मिन्दा होने की ज़रूरत है और अपने समाज की फिक्र करने की ज़रूरत है हम अपने घर के अन्दर सही हो सकते हैं लेकिन हमारे महल्लों में क्या हो रहा है हमारे नवजवान कहां जा रहे हैं जो भी जिम्मेदार हज़रात हैं जिन का समाज में असर है वह इसकी फिक्र करें और लोगों को सही रास्ते पर लाने की जो तबदीरें हो सकती हैं इख़्तियार करें यह हमारी असल ज़िम्मेदारी है जो जाहिरी तदबीरें हम इख़्तियार कर रहे हैं उनका फायदा अपनी जगह है अगर हमने अपनी यह फिक्र कर ली तो मैं समझता हूं कि आमाल की इस्लाह करके अल्लाह से तअ़ल्लुक़ मज़बूत करके जो कुछ हासिल कर सकते हैं और अपने बचाव का सामान कर सकते हैं वह बचाव का सामान शायद हमें ज़ाहिरी तदबीरों से हासिल न हों। ज़ाहिरी तदबीरें तो हमें इसलिए इख़्तियार करना है कि हमें इस का हुक्म दिया गया है लेकिन इससे बढ़ कर जो असल तदबीरें हैं उनकी तरफ़ तवज्जुह करना चाहिए कि इस वक़्त दुन्या में जो फसाद फैल रहा है वह हमारी बदआमालियों का नतीजा है।

ईमान वालों और काफ़िरों में फ़र्क़ः—

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि वह बहुत से गुनाहों को मुआ़फ़ कर देता है अगर वह पूरी पकड़ करने लगे तो दुन्या तबाह हो जाये दुन्या बाक़ी न रहे सब खत्म कर दिये जायें लेकिन आप देखिए लोग दनदनाते फिरते हैं बड़े—बड़े बागी दुन्या में अल्लाह के ना मानने वाले फिर रहे हैं उनका

जलवा है बड़ी बड़ी हुकूमतें उनके पास हैं, वसाइल उनके पास हैं, अल्लाह ने चूंकि दुन्या की कीमत मच्छर के पर के बराबर भी नहीं रखी इसलिए अल्लाह के नज़दीक़ उन चीज़ों की क्या हक़ीक़त है जो उनको दी, हुकूमतें उनको दे दीं ताक़तें उनको दे दीं उनको वसाइल दे दिये दौलत उनको दे दी यह सारी चीज़ें अल्लाह के यहां बेहैसियत हैं लेकिन जब हमने सोचना ही छोड़ दिया और हम भूल गये कि अल्लाह तआ़ला ने हमें दुन्या किस लिए दी थी हमने दुन्या को सब कुछ समझ लिया याद रखना चाहिए कि वह तो अल्लाह ने उनको दी है ईमान वालों के लिए अल्लाह ने जन्नत रखी है, आखिरत की कामयाबी रखी है। दुन्या की जाइज़ नेमतें रखी हैं अल्लाह तआला का इरशाद है पाक चीजें खाओ और अच्छे–अच्छे अमल करो।

(सूरः मोमिनून–51)

इसके अलावा और दूसरी आयतों में भी इस बात का ज़िक्र आया है गोया यह इस बात की इज़ाजत दी गयी है कि अल्लाह ने जो नेमत दुन्या में दी है आदमी उसका इस्तेमाल कर सकता है लेकिन दुन्या और आख़िरत का फर्क़ समझना चाहिए दुन्या की ज़िन्दगी कितने दिनों की है? उनके बाद आदमी क्या करेगा आजकल जो वाकिआ़त हो रहे हैं ऐसे में क्या पता आदमी कब चला जाये क्या भरोसा कि वह कल ज़िन्दा रहेगा। अभी खड़ा था बातें कर रहा था, और अभी गिरा और खत्म हो गया, कितने वाकिआत ऐसे पेश आते हैं, तो अस्ल मामला आख़िरत का है हमें उसकी फिक्र करनी चाहिए उसकी तैयारी करनी चाहिए।

डर किसका होः–

आज के हालात में हमें अपनी ज़िन्दगी को सही रुख पर लाने की ज़रूरत है जो मुनासिब एहतियाती तदवीरें हैं वह भी इख़्तियार की जा सकती हैं और डर को अपने जेहन व दिलो दिमाग़ से निकाल देने की ज़रूरत है और यह समझने की ज़रूरत है कि वही होता है जो अल्लाह चाहता है ऐसा नहीं है कि अल्लाह के हाथ से कुछ निकल गया है, सब अल्लाह के हाथ और उसकी कुदरत में है, उसकी ताक़त सबसे बड़ी है, दुन्या में जो कुछ होता है वह उसके करने से होता है हमें इसका यक़ीन होना चाहिए जब यह यक़ीन पैदा होगा तो आदमी की ज़िन्दगी आसान हो जायेगी, उसका डर निकल जायेगा, हम अपने घर में सलामती के साथ हैं, अब हमें अपने घर से निकलते हुए डर नहीं है कि न जाने क्या हो जायेगा अब हमें अल्लाह की ज़ात पर यक़ीन है कि जब वह चाहेगा तो हमें कहीं डर नहीं लगेगा और अगर अल्लाह की ज़ात पर यक़ीन नहीं है बल्कि बीमारी का डर है, तो यह बीमारी यह छोटे मोटे कीड़े यह छोटे–मोटे जर्रात यह अल्लाह के यहां क्या कीमत रखते हैं यह तो अल्लाह के यहां बहुत हक़ीर हैं इनसे बड़ी चीज़ों की अल्लाह के यहां क्या कीमत है?

ज़ाहिरी तदबीरेंः–

अल्लाह के फैसले असल हैं अल्लाह की ज़ात पर यक़ीन रखा जाये और यह समझा जाय कि अल्लाह के करने से ही होते हैं, यह असबाब कुछ नहीं लेकिन चूंकि अल्लाह ने दुन्या को दारुलअसबाब बनाया है इसलिए हम असबाब इख़्तियार करें

लेकिन जाहिरी असबाब इख़्तियार करने में यह ज़रूर समझ लिया जाय कि सब अल्लाह के करने से होता है असबाब के अन्दर भी तासीर तब पैदा होती है जब अल्लाह चाहता है। बीमार हुए आख़री हद तक पहुँच गये जान निकलने लगी वह वापस आ गये, और एक आदमी कुछ नहीं बस यूं ही चला जा रहा था कि अचानक बीमार हुआ गिरा और मर गया यह सब अल्लाह के करने से होता है इसमें न डरने की ज़रूरत है न परेशान होने की ज़रूरत है। डरना तो बस अल्लाह ही से है। परेशान तो अपने गुनाहों से होना चाहिए जिनकी वजह से यह सब कुछ होता है।

मायूसी कुफ़्र हैः—

अगर हमारे अन्दर इन चीज़ों का एहसास पैदा हो जाये और हम अपनी ज़िन्दगी को बेहतर बनाने की कोशिश कर लें तो अल्लाह से हालात की बेहतरी की उम्मीद है, अल्लाह से मांगें खूब दुआयें करें ज़िन्दगी को बेहतर बनायें सही मिज़ाज बन जाये ज़िन्दगी का रुख़ दुरुस्त हो जाये। पूरे माहौल में एक नूरानियत पैदा हो जाये, पूरी इन्सानियत तै कर ले कि अपने आ़माल अच्छे कर लें कम से कम पूरी दुन्या के मुसलमान अच्छे हो जायें तो सारी वबायें खत्म हो जायेंगी, सारी मुसीबतें और बलायें खत्म हो जायेंगी अल्लाह की तरफ़ से रहमतों का उतरना शुरु हो जायेगा। लेकिन हकीकत यह है कि यह वबायें तो अपनी बदआ़मालियों से हमने मोल ली हैं, हमें इस पर अल्लाह से तौबा करनी है अपने गुनाहों पर नदामत करनी है और कोशिश करनी है कि हमारी आगे की ज़िन्दगी अच्छी हो।

◆◇◆

औलिया उल्लाह .....

जायेंगे और उनसे कहा जायेगा उस दोज़ख़ के अज़ाब का मज़ा चखो जिस अ़ज़ाब की तुम तक़्जीब किया करते थे, और हम उन कुफ़्फ़ारे मक्का को उस बड़े अ़ज़ाब से पहले दुन्या के क़रीबी अ़ज़ाब का भी ज़रूर मज़ा चखायेंगे।

(सूरह सजदः 15—21)

कुरआन मजीद में औलिया उल्लाह का ज़िक्र बहुत जगह आया है हम इतनी आयतों पर इक्तिफा करते हैं मगर याद रहे, अल्लाह का हर वली अल्लाह पर ईमान रखता है, अल्लाह की मह़ब्बत में ग़र्क़ रहता है, अल्लाह की इताअ़त करता है, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान रखता है, आप सल्ल0 की मह़ब्बत में डूबा रहता है, आपकी इताअ़त करता है, आप सल्ल0 की सुन्नतों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता है, ईमाने मुजमल और मुफस्सल पर पक्का यक़ीन रखता है, नमाज़ों की पाबन्दी करता है, रमज़ान के रोज़े रखता है, माल हुआ तो उसकी ज़कात देता है, इस्तिताअ़त हुई तो ह़ज करता है, गुनाहों से बचता है, बाज़ औलिया उल्लाह से कश्फ व करामत का जुहूर भी होता है, लेकिन हर वली से कश्फ व करामत का जुहूर ज़रूरी नहीं है।

अब हम इस दुआ़ पर अपनी बात ख़त्म करते हैः—

या अल्लाह़ अपनी महब्बत दे, और जो तुझसे मह़ब्बत करते हैं उनकी मह़ब्बत दे, और उन आमाल की मह़ब्बत दे जो तेरी मह़ब्बत तक पहुँचा दें, आमीन, सुम्मा आमीन।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः आज कल आम तौर पर शादियों में गाने बजाने तस्वीर खींचने वगैरा का रिवाज़ हो गया है, इस तरह की शादियों में शिर्कत करना दुरुस्त है या नहीं?

उत्तरः शादी की दावत में शिर्कत का उसूल यह है कि अगर वहां गुनाह और बिदअ़त के काम न हों तो उसको क़बूल करना वाजिब है, लेकिन अगर गुनाह और बिदअ़त का वहां होना यक़ीनी हो तो ऐसी दावतों में शिर्कत करना उन लोगों के लिए जो दीनी पेशवा हैं, दुरुस्त नहीं है, और आम लोगों के लिए भी वहां जाना मुनासिब नहीं, हां अगर गुनाह और बिदअ़त का यक़ीन न हो तो आम लोगों के लिए जाने की इजाज़त है, फतावा हिन्दिया में इसकी सराहत मौजूद है।

(फतावा हिन्दियाः 4/104–115)

प्रश्नः आज कल देखा जा रहा है कि बैंक से मिली सूदी रक़म लोग ग़रीब लड़कियों की शादी में दे देते हैं? अगर किसी गरीब लड़की की शादी हो रही हो और उसमें सूदी रक़म इस्तेमाल हो रही हो और उसमें शिर्कत की दावत मिले तो शिर्कत करना चाहिए या नहीं?

उत्तरः बेहतर तो यही है कि सूदी रक़म से जो शादी हो और उसमें दावत हो तो यह दावत न खाई जाए, लेकिन अगर वहां जाना पड़े तो इस क़िस्म की दावत खाने की गुंजाइश है क्योंकि फ़ुक़हा लिखते हैं कि सूद की रक़म सदक़ा कर देना वाजिब है, अगर यह रक़म मुस्तहक़ शख़्स को दी गई तो उसके हक़ में यह सदक़ा करार पायेगी और सदक़ा का हुक्म यह है कि वास्ता आ जाने से माल का हुक्म बदल जाता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार अपनी ख़ादिमा हज़रत बरीरा रज़ि0 के यहाँ तशरीफ़ ले गये वह गोश्त पका रहीं थीं, उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने खाना पेश किया, लेकिन उसमें गोश्त नहीं था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वजह दरयाफ़्त की, उन्होंने अ़र्ज़ किया यह गोश्त सदक़ा का है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तुम्हारे लिए सदक़ा है लेकिन जब तुम मुझे खिलाओ तो मेरे लिए यह हदीया है, बुख़ारी में यह रिवायत मौजूद है, इमाम बुख़ारी रह0 ने एक बाब में इन मसाएल को बयान किया है, इस रिवायत के पेशे नज़र अगर किसी ग़रीब और मुस्तहक़ शख़्स को सूद की रक़म सद्क़ा की जाए और वह उससे दावत का एहतिमाम करे और दूसरों को खिलाए तो उसकी गुंजाइश है।

प्रश्नः जिन लोगों का कारोबार सूदी है, अगर वह दावत करें तो उनकी दावत में शिर्कत करना चाहिए या नहीं?

उत्तरः कुर्आन मजीद में सूद की हुर्मत वाज़ेह तौर पर बयान की गई है, और हदीस में उसकी बड़ी (बुराई) आई है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सूद लेने वाले, देने वाले, लिखने वाले और सूदी मुआ़मला में गवाह बनने वाले सभों पर लानत भेजी है।

(मुस्लिम, हदीसः 4092)

इस रिवायत से मालूम हुआ कि सूदख़ोर की हौसला अफ़्ज़ाई दुरुस्त नहीं, इसलिए उलमा और दीन के पेशवा को ऐसे लोगों की दावत में शिर्कत

शेष पृष्ठ.....29..पर...

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

–मौलाना बुरहानुद्दीन सम्भली रह0 –अनुवादकः मौलाना मु0 जुबैर अहमद नदवी

हिन्दू धर्मः–

हिन्दू धर्म असल में रीति– रिवाज और एक विशेष जीवन शैली का नाम है इसमें शादी विवाह के बारे में अगरचे विस्तृत निर्देश मिलते हैं मगर औरत की पवित्रता और उसके किसी एक ही मर्द के साथ सम्बंधित रहने की कल्पना इतनी साफ़ सुथरी और मज़बूत नहीं मिलती कि औरत में साझेदारी की संभावना समाप्त हो जाए या शादी के बिना उस से यौन सम्बन्ध की गुंजाइश बिलकुल बाक़ी न रहती हो इस के अलावा ये कि इस धर्म में वैवाहिक सम्बन्ध को कभी न टूटने वाला माना गया है और तलाक़ की ज़रुरत का कोई हल नहीं पेश किया गया है।

विवरण, हवालों के साथ आगे आ रहा है, यहाँ हाल ही में हाई कोर्ट के एक मुकद्दमे की कार्यवाही के उस भाग को पेश कर देना रोमांच से ख़ाली न होगा जिस में एक हिन्दू पति ने अपनी हिन्दू पत्नी के तलाक़ की मांग को इस आधार पर रद कर देने की अदालत से मांग की कि ''कोई पति अपनी हिन्दू पत्नी को नहीं छोड़ सकता और उसे अनिवार्य रूप से अपने पति की क़ानूनी शादी शुदह पत्नी बन कर रहना चाहिए।''

(दैनिक ''क़ौमी आवाज़'' लखनऊ संस्करण 15, जनवरी 1976)

फिर हिन्दू मत में शादियों की इतनी क़िस्में हैं कि जिन की मौजूदगी में ''यौन सम्बन्ध'' पर नाजायज़ होने का हुक्म बहुत ही सीमित हो जाता है। और औरत की आज़ादी बिल्कुल छिन जाती है, इंसाइक्लोपीडिया का लेखक लिखता है कि ''स्मृति'' में आठ क़िस्म की शादियों को स्वीकार किया गया है।

(जिल्द 8 पृष्ठः 451)

उनमें एक क़िस्म का नाम ''असूरा'' है ये तरीक़ा योद्धाओं और निचली जाति के लोगों में प्रचलित था जिसमें औरत को ख़रीदा जाता था।

इसी तरह एक क़िस्म का नाम राक्षस है, जिसमें औरत पर ज़बरदस्ती क़ब्ज़ा कर लिया जाता था।

(जिल्द 8 पृष्ठः 451–52)

यहाँ हिन्दू धर्म की विश्वसनीय व मशहूर किताब ''मनुस्मृति'' (उर्दू अनुवाद) से प्रत्यक्ष रूप से भी कुछ धाराएं लिखी जाती हैं, जिनसे हिन्दू धर्म के अंदर वैवाहिक सम्बन्ध व यौन सम्बन्ध के विभिन्न स्वरूपों का पता चलता है और औरत की हैसियत का अंदाजा होता है।

मनुस्मृति, अध्याय–1, धारा 2 में हैः– रात दिन औरत को पति द्वारा अधिकार हीन रखना चाहिए।''

मनुस्मृति अध्याय 9, धारा 58 में हैः–

''अगर संतान न हो तो अपने परिवार के बुज़ुर्गों से अनुमति ले कर मालिक (पति) के परिवार के रिश्तेदार या देवर से संतान पैदा करे।''

मनुस्मृति अध्याय 9, धारा 59 में हैः–

''पिता से आज्ञा पा कर बदन में घी लगा कर, शांत हो कर, विधवा औरत से लड़का पैदा करे, एक लड़के के अलावा दूसरा कभी न पैदा करे।''

मनुस्मृति अध्याय 9, धारा 60 में हैः– ''बहुत से अचारिज (वेद के ज्ञानी) विधवा औरत में दूसरी संतान को भी वैध समझते हैं क्योंकि एक संतान कुछ परिस्थितियों में शून्य समान

होती है। (पृष्ठः 177)

मनुस्मृति अध्याय 9, धारा 68 में हैः– ''जिस बेटी को किसी को ज़बान देने को कह चुके और वो व्यक्ति जिस को देने को कहा शादी होने से पहले मर गया तो उसका असली भाई उस बेटी की शादी निम्न विधि अनुसार करे।'' (178)

मनुस्मृति अध्याय 9, धारा 69 में हैः– ''पवित्रता से व्रत करने वाली सफेद कपड़े पहने हुए कन्या का विवाह शास्त्र की रीति से करे उससे जो संतान होगी वो उसकी होगी जिस को वो बेटी मौखिक इक़रार पर पहले दी गयी।'' (पृष्ठः 178)

मनुस्मृति अध्याय 9, धारा 119 में हैः– ''छोटा भाई बड़े भाई की पत्नी में बेटा पैदा करे तो उस बेटे के साथ चाचा लोग बराबर विभाजित करें।''

(पृष्ठः 182)

शादी के इन असभ्य बल्कि अश्लील स्वरूपों के अलावा हिन्दू धर्म में पति की उपस्थिति में ही दूसरे व्यक्ति से औरत को ''नियोग'' (अस्थाई शादी, विवरण आगे आ रहा है) करने की इजाज़त भी हिन्दू धर्म से सम्बंधित विश्वसनीय किताबों में मिलता है शायद हिन्दू धर्म की तरफ से मिली इसी ढील का यह असर है कि हिन्दू पति अपनी हिन्दू पत्नी को दूसरे व्यक्ति के साथ यौन सम्बन्ध स्थापित कर लेने का बाकायदा हस्ताक्षरित इकरार नामा लिखने में आज भी कोई हरज नहीं समझता जैसा की न्यायिक कार्यवाही की एक मीडिया रिपोर्ट में कहा गया कि फलां का हस्ताक्षरित एक इकरार नामा अदालत में दाख़िल किया जिसमें फलां ने अपनी पत्नी श्रीमती फलां से सम्बन्ध स्थापित करने की सहमति दी थी। ''(दैनिक क़ौमी आवाज़ 15 जनवरी 1976 ई०) और ये तरीक़ा अब तक धार्मिक रूप से मना नहीं क्योंकि हिन्दू धर्म के निकट अतीत के मशहूर समाज सुधारक और आर्य समाज के संस्थापक व गुरु स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने लेक्चरों में बिना किसी खंडन के बल्कि समर्थन के साथ बयान किया है।

यहां उक्त स्वामी जी के पूना शहर में दिए गए 15 लेक्चरों का छपा हुआ संग्रह ''उपदेश मंजरी'' की ''12वीं व्याख्या'' से एक वाक्यांश पेश किया जाता है जिस से उल्लेखित वास्तविकता का प्रमाण मिलता है।

''कुछ परिथितियों में पति के जीवन में भी ''नियोग'' की अनुमति मिलती थी! नियोग 10 बार करने की इज़ाजत थी।''

इसके बाद स्वामी जी अपनी बात के समर्थन में हवाले देते हुए कहते हैंः–

''व्यास जी ने विचित्र वीर्य की दोनों औरतों से जो कि ''विधवा'' थीं नियोग किया था मनु जी ने भी नियोग की इज़ाजत दी है। प्राचीन आर्य लोगों में पति के जीवन में भी नियोग होता था इस के समर्थन में महा भारत के बहुत से दृष्टान्त पेश किये जा सकते हैं व्यास जी बड़े पंडित और धर्मात्मा थे उन्हों ने चित्र आमगजाद और विचित्रवीर्या दोनों की स्त्रियों से नियोग किया और उनमें से एक के पेट से ''पांडव'' पैदा हुए और ये पहले ही बयान हो चुका है कि पांडव की मौजूदगी में ही उसकी स्त्री ने दूसरे मर्द के साथ नियोग किया इस तरह उस समय नियोग का प्रचार था।''

ये सब सुनाने के बाद भी स्वामी जी इस पर न शर्माते हैं और न परेशान हैं इस के विपरीत वे न सिर्फ़ ये कि मौजूदा जमाने में इस रिवाज़ के कम या ख़त्म हो जाने पर हार्दिक दुःख और बहुत ही ख़ेद व्यक्त करते हैं अतः इसी लेक्चर में ये भी मिलता है :–

''अब इस समय में नियोग और पुनर्विवाह दोनों के बंद हो जाने से आज कल के आर्य लोगों में जो भ्रष्टाचार फैला हुआ है वो आप लोग देख ही रहे हैं।''

(उपदेश मंजरी पृष्ठः 108)

स्वामी जी इस पर बस नहीं करते बल्कि वो तो पुनर्विवाह के मुकाबले में नियोग (अस्थायी शादी) को वरीयता देते और उसे लाभदायक बताते हैं जैसा कि उन्होंने इसी लेक्चर के मध्य में साफ़ साफ़ कहा है :–

''आर्य लोगों में विधवा विवाह के मुकाबले नियोग अच्छा है क्योंकि अगर विधवा विवाह की इज़ाजत मिल जाए तो औरतें अपने पति को ज़हर दे कर मारना शुरू कर दें।''

और भी मज़े की बात ये है कि अगर शादी शुदा औरत नियोग करती है तो उससे पैदा होने वाली संतान पहले पति की ही समझी जाती है न कि वर्तमान की, स्वामी जी ने अपने इसी लेक्चर में पुनर्विवाह और नियोग का अंतर बताते हुए इस वास्तविकता से भी पर्दा उठाया है।

यहाँ पर कुछ लोग ये सवाल करेंगे कि ''नियोग'' और ''पुनर्विवाह'' में क्या अंतर, इस का जवाब ये है कि ''पुनर्विवाह'' से मर्द और औरत का सम्बन्ध उम्र भर के लिए हो जाता है लेकिन इसके विपरीत ''नियोग'' का सम्बन्ध सिर्फ़ एक या दो संतान पैदा होने तक रहता है उसके बाद औरत और मर्द का आपस में कोई सम्बन्ध नहीं रहता और वो एक या दो संतान पहले पति की ही समझी जाती हैं और उसी का नाम चलाती हैं।'' (उपदेश मंजरी पृष्ठः 107)

इससे आगे ये कि औरत वास्तविक स्थाई पति के अलावा एक या दो ही से नहीं दस मर्दों तक से नियोग कर सकती है जैसा कि स्वामी जी ने ''ऋग्वेद'' की टीका में बयान किया है :–

ऐ औरत! तू विवाहित पति समेत ग्यारवें पति तक नियोग कर'' (ऋग्वेद आदमी भाष्य भूमिका''।

(उर्दू अनुवाद पृष्ठः 213)

इस सामाजिक व्यवस्था को अगर इसको सामाजिक व्यवस्था कहना सही हो– का अनिवार्य तकाज़ा ये था कि एक औरत का एक समय में कई कई मर्दों से यौन सम्बन्ध स्थापित करना न सिर्फ ये कि बुरा न रहे बल्कि एक हद तक प्रोत्साहन योग्य समसझा जाए और उसके नतीज़े में औरत को अपने पति के अलावा दूसरे मर्द के इस्तेमाल में लाने का रिवाज़ पड़ जाए अतः ऐसा ही हुआ जिसका सबूत ख़ुद हिन्दू धर्म की विश्वसनीय बल्कि ''पवित्र किताबों और ''इतिहासों'' से मिलता है, इस बारे में यहां मशहूर अंग्रेज़ क़ानूनविद ''जॉन डी० मैन'' की किताब के विश्वसनीय उर्दू अनुवाद ''क़ानून और रिवाज़–ए–हुनूद'' से कुछ अंश पेश किये जा रहे हैं।

इस व्यवस्था की कुछ विशेषताओं की वजह वो तरीक़ा था जिस से औरत अनेक पतियों से सम्बन्ध रख सकती थी''।

(क़ानून रिवाज–ए–हुनूद जिल्द 1/92)

आगे चल कर लेखक ने हिन्दुओं के विभिन्न समुदायों के अंदर इस रिवाज़ के मौजूद होने के सबूत के तौर पर बहुत सी मिसालें पेश की हैं उनमें से कुछ यहाँ उल्लेख की जाती हैं वो ''गैर आर्य समुदायों में अनेक पतियों का रिवाज'' शीर्षक के अंतर्गत बताता है।

(क़ानून रिवाज–ए–हुनूद जिल्द 1/93)

हिन्दुस्तान के गैर आर्य समुदायों में ये तरीक़ा पहले भी था और अब भी मौजूद है। ''नायरों में शादी के बाद औरत अपने ही घर में रहती है और अपनी मर्जी के मुताबिक अनेकों से दोस्ती करती है''। मदुरा के पश्चिमी कलानों में अक्सर ये होता है कि एक औरत के दो या

छः या आठ या दस पति होते हैं।''
(क़ानून रिवाज–ए–हुनूद जिल्द 1/94)

नीलग्री के टोडों में भी पत्नी सारे भाइयों की संपत्ति होती है।''
(क़ानून रिवाज–ए–हुनूद जिल्द 1/94)

गैर आर्यन समुदायों में ही नहीं आर्यन समुदायों में भी कई पतियों से शादी का रिवाज प्रचलित होने का सबूत भी मौजूद है अतः इस में ये भी मिलता हैः–

हिमालय की घाटियों में कई पतियों से शादी करने का तरीका अपने प्राचीन और बहुत ही सादा रंग में दिखाई देता है पश्चिमोत्तर देशों के बुद्ध और ब्राह्मण कबीलों में ये चीज़ दिखाई देती है। उत्तर भारत की घाटियों में भी इस रिवाज़ के चिन्ह कुछ कबीलों में पाए जाते हैं।''
(क़ानून रिवाज–ए–हुनूद जिल्द 1/94)

ये रिवाज सिर्फ़ ग़रीबों अनैतिक प्रजा लोगों ही के अंदर नहीं था धनवानों बल्कि शासकों और उच्च स्तरीय धार्मिक वर्गों में भी पाया जाता था जैसा कि उक्त किताब में हर घटना की तरह पूर्ण संदर्भ के साथ ये भी लिखा गया है :–

बाबत्ला (गौतम के परिवार की वो औरत जो अपनी नैतिकता के लेहाज़ से बेमिसाल थी) सात गुरुओं के साथ रहती थी और मुनि की लड़की ने दस भाइयों के साथ सम्भोग किया था।''
(क़ानून रिवाज–ए–हुनूद जिल्द 1/94)

इन वाक़ियों के साथ ये वाक़िया भी पढ़ते चलिए :–

महा भारत और विष्णुपुराण में ये बयान किया गया है कि राजा सौदास ने किस तरह दुष्ट को इस बात पर राजी किया कि वो उसकी पत्नी दमायान्ति से बेटा पैदा करा दे क्योंकि उक्त राजा निःसंतान था।''
(क़ानून रिवाज–ए–हुनूद जिल्द 1/104)

इस विवरण के बाद महा भारत की ये स्पष्टीकरण भी न चाहते हुए भी सुन लेने का कष्ट कर लीजिए! अगर पति दूसरे से सम्बन्ध बना कर उसके लिए बीज पैदा करने के लिए हुक्म दे और पत्नी उसके अनुपालन से इंकार करे तो हिन्दू धर्म के अनुसार वह पाप करने वाली समझी जाएगी। ''
(क़ानून रिवाज–ए–हुनूद जिल्द 1/105)

उक्त लेखक इन विवरणों के बाद ये परिणाम निकालने में बिलकुल सही मालूम होता है (और पाठक भी शायद उसके विचार के साथ होंगे) कि ''स्त्री–पुरुष के सम्बन्ध में न सिर्फ़ बहुत सी कमियां थीं बल्कि सतीत्व और पाकदामनी का तत्व शून्य था।'' एक औरत के एक से ज़ियादा पति होने का रिवाज़ सिर्फ हिन्दुओं या भारत में ही नहीं बल्कि बहुत से दूसरे मुल्कों और समुदायों में भी है जैसा की मशहूर समाजशास्त्री ''प्रो० मनीष कुमार राधा'' ने बताया कि :''एशिया अफ्रीका, अमरीका, ऑस्ट्रेलिया, ओसिआना के कई भागों में ये रिवाज़ विभिन्न स्वरूपों में मौजूद है।

एशिया के जिन देशों में ये रिवाज़ मौजूद है उनमें भारत श्रीलंका और नेपाल शामिल हैं तिब्बत में तो बाप और बेटा एक ही औरत से शादी करते हैं।

भारत में लद्दाख के बुद्धों हिमाचल के सरमोर जिला में ऊँची जात वालों में भी ये रिवाज़ मौजूद है।

प्रोफेसर राहा ने बताया कि अफ्रीका के देश नाइजेरिया में ये रिवाज़ कई स्वरूपों में आज भी मौजूद है प्रोफेसर साहब ने आगे बताया कि लेह और उसके आसपास 90 प्रतिशत परिवारों में ये रस्म ज़ारी है। (उर्दू दैनिक क़ौमी आवाज़ लखनऊ जनवरी 1996 ई०)

क़ौमी आवाज़ लखनऊ के संस्करण 6 फरवरी, 1986 ई० में

बलराजपुरी के एक लेख का अंग्रेज़ी अख़बार से अनुवाद प्रकाशित हुआ उसमें है ''एक से ज़ियादा पत्नियां रखने का रिवाज़ गैर मुस्लिमों में मुस्लिमों से ज़ियादा है।''

यहाँ अन्य धर्मों के वैवाहिक क़ानून के सारे विवरण पेश करना नहीं बस झलकियां दिखाना मकसद है मगर ये संक्षिप्त समीक्षा भी सामयिक व क्षेत्रीय धर्म और एक सनातन व सार्वभौमिक दीन (धर्म) के बीच स्पष्ट अंतर है इस का अंदाज़ा करने के लिए इंशाअल्लाह काफी होगा। और इसके बाद ये नतीज़ा निकालना भी शायद मुश्किल न होगा कि दूसरों की तरफ़ से शरई क़ानूनों को हक़ीर समझने और कमी निकालने का कारण और कटाक्ष और आपत्ति को निशाना बनाने की वजह नावाकिफ होना है या फिर इस्लाम के रौशन और चमकते चेहरे को आरोपों और मिथ्यारोपणों के गर्द व गुबार में छिपाना और अपने धर्मों में इस बारे में कमी बल्कि इससे खाली होने और नेतृत्व की योग्यता से वंचित होने के ऐब पर पर्दा डालना है। आगे कोशिश की गयी है कि दूसरों (और उनसे प्रभावित कुछ अपनों) का उड़ाया हुआ गर्द व गुबार साफ़ करके शरीयत का असल चमकता हुआ रौशन चेहरा सामने लाया जाए कि इसकी अपनी सुंदरता और निजी गुण खुद ही संदेहों को दूर करने और गलतफहमियाँ समाप्त करने का अल्लाह की तौफ़ीक़ से हमेशा कारण बना है। ◆◇◆

प्रश्नाकें के उत्तर.....

नहीं करनी चाहिए ताकि सूदख़ोर की हौसला शिकनी हो, अलबत्ता आम मुसलमानों के लिए हुक्म यह है कि अगर मालूम हो कि दावत सूदी पैसे से की जा रही है तब तो दावत में शिर्कत क़तअन जाइज़ नहीं है, और अगर मालूम हो कि दावत हलाल पैसे से हो रही है तो दावत में शिर्कत जाइज़ है, और अगर मुतअ़य्यन तौर पर उस का इल्म न हो तो देखा जाएगा कि उसकी आमदनी का बड़ा ज़रीआ क्या है? अगर बड़ा ज़रीआ हराम है तो दावत में शिर्कत दुरुस्त नहीं और अगर बड़ा हिस्सा हलाल है तो दावत में शिर्कत जाइज़ है।

(फतावा हिन्दियाः 5/243)

प्रश्नः अगर गैर मुस्लिम दोस्त की तरफ़ से दावत हो तो उसकी दावत क़बूल करना और उसमें शिर्कत करना दुरुस्त है या नहीं?

उत्तरः इस्लामी तालीमात में यह तालीम शामिल है कि गैर मुस्लिमों से भी इन्सानी उख़ुव्वत और भाई चारा का रिश्ता है, इसलिए उनकी दावत क़बूल करना और उनकी दावतों में शिर्कत करना बुन्यादी तौर पर दुरुस्त है बशर्ते कि खाने में कोई हराम या शक शुब्हे वाली चीज़ न हो। (फतावा तातार ख़ानियाः 5/523) रिवायत में आता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक यहूदी की दावत क़बूल फरमाई है।

(सहीह बुख़ारी, हदीसः 2617)

प्रश्नः अगर कोई गैर मुस्लिम सियासी लीडर ऐलेक्शन में खड़े होने के मौक़े से मुसलमानों की दावत करे तो उसमें शिर्कत दुरुस्त है या नहीं?

उत्तरः अगर उस दावत में शिर्कत करने से मुसलमानों का कोई मिल्ली और दीनी नुक़सान न हो तो उसमें शिर्कत करने में कोई हर्ज नहीं हैं। मौलाना ज़फर अहमद उस्मानी ने ''ऐलाउस्सुनन'' में यह सराहत की है मुश्रिकीन और अहले किताब की तरफ़ से यह हदीया पेश किया जाना और उन के हदीया को क़बूल करना यह सारी चीज़ें जाइज़ हैं।

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे.....

ऐकता का संदेष्टा

–अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह0–

अनुवादकः इं0 जावेद इक़बाल

(रसूले वेहदत)

संदेष्टा (रसूल) की भ्रामक छविः–

यह स्पष्ट करना भी आवश्यक है कि इस्लाम के पूर्व, संदेष्टा और ईशदूत की स्पष्ट एवं असंदिग्ध वास्तविकता संसार के समक्ष न थी। यहूदियों के विचार से दूतवाद का अर्थ केवल भविष्यवाणियों से था और ईशदूत को भविष्य वक्ता कहते थे। और विश्वास करते थे कि उसका वरदान एवं प्रकोप तुरन्त प्रभावी होता है। इसी कारण तौरेत के पृष्ठों में इस विषय की पंक्तियाँ उपलब्ध हैं। यही कारण है कि हज़रत इब्राहीम अलै0, हज़रत लूत अलै0, हज़रत इस्हाक़ अलै0, हज़रत याकूब अलै0 और हज़रत यूसुफ़ अलै0 के संदेष्टा होने का धुंधला सा एहसास ही उनके यहां मिलता है। इतना ही नहीं, कुछ ईश दूतों के विपरीत कुछ पुजारियों का स्थान अधिक उच्च स्तरीय जान पड़ता है। हज़रत दाऊद अलै0 और हज़रत सुलैमान अलै0 का स्थान केवल सम्राट मात्र है और भविष्य वक्ता उनसे अलग कुछ दूसरे लोग हैं।

यहूदियों की भांति ही ईसाई भी सब ईशदूतों को समान स्तरीय नहीं मानते यही कारण है कि इंजील में हज़रत ईसा अलै0 का कथन है कि उनसे पहले नियुक्त होने वाले चोर और डाकू थे। स्पष्ट है कि ईसाइयों के प्रति हज़रत ईसा अलै0 से पूर्व के ईशदूतों का क्या स्थान है। वर्तमान इंजीलों में न ईश दूतों की प्रशंसा है न उनका वर्णन, न उनकी सत्यता एवं सदाचार की गवाही। निःसंदेह हज़रत ज़करिया अलै0 एवं हज़रत यहिया का वर्णन उपलब्ध है परन्तु संदेष्टा अथवा ईशदूत के स्तर का नहीं है।

उपरोक्त विचारधारा का प्रभाव यह हुआ कि यहूदी और ईसाई दोनों ही ईश दूतों से अनेक गन्दी भद्दी बातें निःसंकोच सम्बद्ध करने लगे। उदाहरण के लिए हज़रत लूत पर बदकारी का आरोप, हज़रत सुलैमान को तावीज़, गण्डे और जादू का प्रचारक मानते थे। जब कि स्वयं तौरेत में जादू मन्त्र को व्यभिचार बताया गया है। ईसाई हज़रत ईसा के अतिरिक्त अन्य सभी ईशदूतों को गुनहगार मानते हैं। बल्कि वर्तमान इंजील के अनेक कथनों से स्पष्ट होता है कि यहूदियों के समान स्वयं ईसाई भी हज़रत मरियम एवं हज़रत ईसा से कुछ ऐसी बातें सम्बद्ध करते हैं जो उनके उच्चतम स्तर के पूर्णतयः विपरीत हैं। उदाहरणार्थ यहूदी हज़रत मरियम पर बदकारी का आरोप लगाते हैं और इंजील की शैली से ऐसा प्रतीत होता है कि हज़रत ईसा अलै0 धर्मादेश के विपरीत अपनी माता का आदर नहीं करते थे जब कि धर्मादेश के अनुसार माता पिता का आदर न करना बहुत घृणित कार्य है इसी प्रकार वर्तमान इंजील से ज्ञात होता है कि हज़रत ईसा अलै0 नमाज़, रोज़े का विशेष ध्यान नहीं करते थे।

इस्लाम में संदेष्टा (रसूल) का अर्थ, तात्पर्य एवं व्याख्याः–

आदरणीय ईश दूतों पर यहूदी और ईसाइयों के भांति भांति के आरोपों का कारण यह था कि उनके मतानुसार धर्म में दूत एवं संदेष्टा की कोई उत्तम सम्मानजनक विचारधारा न थी और न ही उनके उच्च आचरण का कोई महत्व था। परन्तु इस्लाम ने संसार के समस्त संदेष्टाओं एवं ईशदूतों की महानता का सम्मानजनक उच्चतम स्तर स्थापित किया। इस्लाम के दृष्टिकोण से समस्त ईशदूत और संदेष्टा पवित्र आचरण के थे आम इंसानों से अधिक ऊँचे स्तर पर आसीन थे। इस्लाम के सिद्धान्तानुसार समस्त ईशदूतों पर विश्वास एवं आस्था आवश्यक है, वह सब ईश्वर द्वारा विशेष पद पर स्थापित किये गये थे। उन सब की नियुक्ति का उद्देश्य इंसानों को ईश्वर के आदेशों से अवगत कराना और भलाई वाला सत्यमार्ग दिखाना था। अतः वे सब सत्यमार्ग दर्शाने वाले, ईश्वर के समीप करने वाले एवं उसके आदेश पहुंचाने वाले थे। वे सब ज्योति, जागृति के जनक, ईश्वर के प्रिय और अपने अपने समय के सर्वोत्तम महान पुरुष थे।

इस्लाम में संदेष्टाओं की संख्या निर्धारित नहीं, परन्तु पवित्र कुरआन में इनको दो वर्गों में बाँटा गया है। एक वह जिनके स्पष्ट नामों का उल्लेख पवित्र ग्रंथ कुरआन में कर दिया गया है और दूसरे वह जिनके नामों से अवगत नहीं कराया गया। प्रथम वर्ग के ईशदूत तो कुछ वह हैं जिनको यहूदी, ईसाई एवं अरब वासी सब जानते थे जैसे हज़रत इब्राहीम। कुछ ईशदूत वह हैं जिनसे अरब वासी अवगत थे परन्तु यहूदी और ईसाई उन्हें नहीं जानते थे जैसे हज़रत हूद एवं हज़रत शुऐब अलै0। कुछ ईशदूत ऐसे हैं जिन्हें यहूदी और ईसाई ईशदूत नहीं मानते, परन्तु वास्तव में वह ईशदूत थे जैसे हज़रत दाऊद अलै0 और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम।

दूसरे वर्ग में प्रत्येक देश एवं सम्प्रदाय के वह पवित्र आचरण वाले व्यक्ति सम्मिलित हो सकते हैं जिनको उनके मानने वाले संदेष्टा का स्थान देते हैं जैसे युनान के सुक़रात, ईरान के ज़रतुश्त, भारत के श्री राम और श्री कृष्ण तथा महात्मा गौतक बुद्ध और चीन के हकीम कनफ़्यूश्स आदि। सिद्धान्तः यह आवश्यक है कि प्रत्येक दूत की शिक्षा में अद्वैत (तौहीद) एवं धर्म की मूल शिक्षा अवश्य सम्मिलित हो। हमें पूर्ण विश्वास के साथ इन ईशदूतों के नामों का ज्ञान नहीं क्योंकि हमारे पास ज्ञान का सुरक्षित अपरिवर्तित एवं विश्वसनीय स्रोत केवल अन्तिम ईशवाणी है जो अन्तिम संदेष्टा हज़रत मुहम्मद साहब पर अवतरित हुई, पवित्र कुरआन के रूप में उपलब्ध है, और वह इनके नामों के विषय में शांत है। अतः समर्पणवादी (मुसलमान) को, उन ईशदूतों को तो नाम सहित स्वीकारना आवश्यक होगा जिनके नामों का वर्णन पवित्र कुरआन में किया गया है और उनको जिनका नाम नहीं बताया गया, बिना नामित किये सैद्धान्तिक रूप में मानना होगा और उनकी सच्चाई को स्वीकार करते हुए, इस स्वीकारने को मुक्ति का कारण मानना आवश्यक होगा।

उन सब ईशदूतों का धर्म एक ही है उनकी शिक्षा भी एक है, वह सब पवित्र आचरण वाले थे, वह सब ईश्वर के दर्शाये सत्यमार्ग पर चलने वाले सतपुरुष थे। उन सबका उद्देश्य भी एक ही था। उन सबके जीवनयापन का तरीक़ा सैद्धान्तिक रूप से एक

ही था। उन सब के ईशदूत होने की पहचान ही यह है कि उन सबने एक ही धर्म की शिक्षा दी।

पवित्र कुरआन की अनेक आयतें हैं जिनमें एक ही संदेश एवं शिक्षा की विचारधारा प्रस्तुत की गई है और समर्पणवादियों को अवगत कराया गया है कि वह संसार के समस्त संदेष्टा एवं ईशदूतों का समान रूप से आदर सत्कार करें और उन सबको समान स्तरीय समझें। और यह सिद्धान्त प्रस्तुत किया गया है।

''हम ईश्वर के दूतों में कोई भेदभाव न करें''

पवित्र कुरआन की शिक्षा है कि संसार के समस्त समुदायों में ईश्वर के दूत आये और सबने ईश्वर के संदेश मानव जाति को सुनाये। कोई समुदाय ऐसा नहीं जिसके मध्य ईशदूत न आया हो।

अरब और गैर अरब, रोम और सीरिया, इस्राईली और इसमाईली, ईरानी और तूरानी, भारतीय और चीनी का कोई अन्तर नहीं। इस शिक्षा का प्रभाव यह हुआ कि मुसलमान, यहूदियों के दूतों ईसाईयों के दूतों और सिद्धान्ततः ईरान, भारत, चीन आदि के समस्त सतमार्गी उपदेशकों को सच्चा और आदरणीय मानते हैं चाहे उनके नाम जानते हों, चाहे न जानते हों।

ग्रंथों की एकताः—

यह शीर्षक धर्मों की एकता के सम्बन्ध में इस्लाम की उच्च एवं असीम विचारधारा को संसार के समक्ष प्रस्तुत करता है इस्लाम से पहले अन्य धर्मों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया था। यहूदी तौरेत के अतिरिक्त कुछ नहीं मानते। ईसाई तौरेत की नैतिक शिक्षाओं को तो मान्यता देते हैं परन्तु आदेशों को अस्वीकार करते हैं तथा दुन्या के अन्य पवित्र ग्रंथों को पूर्णतयः अस्वीकार करते हैं। पारसी ''ओस्ता'' के अतिरिक्त अन्य किसी ग्रंथ को ईशवाणी मानने के लिए तैयार न थे और हिन्दुस्तान के ब्रह्मण वेदों के सिवा खुदाई इलहाम का तसव्वुर भी नहीं कर सकते थे।

परन्तु हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने जो लचीली नीति और खुली विचारधारा इस सम्बन्ध में प्रस्तुत की वह इस्लाम ही की नहीं बल्कि दुन्या की अनुपम शिक्षा का एक अनूठा अंग है। इस शिक्षा के अनुसार एक मुसलमान का कर्तव्य है कि वह पवित्र कुरआन की भांति पूर्व नियुक्त सभी संदेष्टाओं के ग्रंथों को सत्य समझे और उनको ईशवर का संदेश माने। अर्थात पवित्र कुरआन को सत्य मान कर समर्पणवादी होने का अर्थ यह है कि वह आदि ग्रंथों का भी मानने वाला है और आदिग्रंथों को अस्वीकार करने का तात्पर्य यह है कि उसने कुरआन को भी सत्य नहीं माना। जिस प्रकार कुरआन को नकारना इस्लाम में कुफ़्र है उसी प्रकार पूर्व अवतरित ईश वाणियों का नकारना भी इस्लाम में कुफ़्र के समान है। यह आदर सम्मान और उदार नीति इस्लाम के अतिरिक्त कहां मिलेगी।

ईशग्रंथ यद्यपि असंख्य हैं फिर भी विशेष रूप से चार ग्रंथों के नामों का उल्लेख कुरआन में किया गया है, तौरेत, ज़बूर, इंजील और कुरआन। इनके अतिरिक्त एक स्थान पर आदरणीय इब्राहीम के किताबचों (पांडुलिपियों) का उल्लेख हुआ है परन्तु उनके नाम नहीं बताये गये। कुछ आयतों में केवल ''आदि ग्रंथ'' या आदि मानव के ग्रंथों का उल्लेख हुआ है, नामों का स्पष्ट विवरण नहीं दिया गया है। परन्तु प्रत्येक स्थान पर एवं प्रत्येक उल्लेख में उनकी सत्यता को समान रूप से स्वीकार करने का आदेश दिया गया है।

शेष पृष्ठ ...40..पर

इस्लामिक विधान

की असल विशेषता यही है कि जीवन के हर क्षेत्र में इसके क़ानून, न्याय की मांग को पूरा करते हैं।

—मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी

माँ—बाप अपने बच्चों के स्वभाव और उनकी ज़रूरतों से सबसे ज़ियादा परिचित होते हैं और दूध पीने वाले बच्चों के इशारों को उन्हें समझने में मुश्किल नहीं होती, यह तो ख़ैर इन्सान हैं, जानवर और हैवान जो बातचीत की शक्ति से भी वंचित हैं और जिन को इशारे की भी ज़बान नहीं आती उनके मालिक और उनका पालन पोषड़ करने वाले भी उनकी ज़रूरतों और स्वभाव से भलीभांति परिचित होते हैं और इसी लिहाज़ से उनके रहने सहने और खाने पीने का इन्तिज़ाम करते हैं।

स्पष्ट है कि विश्वनिर्माता और दुन्या का स्वामी इस धरती पर बसने वाली समस्त सृष्टि विशेष रूप से इन्सान के नफ़ा व नुक़सान, उनकी भावनाओं और ज़रूरतों को सबसे ज़ियादा जानने वाला होगा, इसलिए स्वयं दुन्या का सृजनहार इन्सान के लिए जितनी उत्तम जीवन प्रणाली और उचित क़ानून बना सकता है दूसरा कोई नहीं बना सकता, जीवन व्यवस्था को संकलित करने क लिए इल्म की ज़रूरत है और ख़ुदा से बढ़ कर कोई अलीम नहीं और उसके लिए निर्णय शक्ति और ज्ञान चाहिए, उससे बढ़ कर कोई ज्ञानी नहीं, इसीलिए कुरआन मजीद ने फ़रमाया निर्णय करने का अधिकार केवल उसी को है, ''अला—लहुल—हुक्म'' (सूरः अल अनआम, ख़ूब सुन लो, फैसला अल्लाह ही का होगा)

अल्लाह तआला ने जिस प्रकार दुन्या में इन्सान के खाने पीने, लिबास व पोशाक और दूसरी ज़रूरतों का इन्तिज़ाम किया है उसी प्रकार उसने इन्सान को अपनी जीवन व्यवस्था के बारे में भी अंधेरे में नहीं रखा, क्योंकि एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों का एक समूह पूरी इन्सानियत की भावनाओं, आवश्यकताओं और प्राकृतिक इच्छाओं से अवगत नहीं हो सकता और उससे इस बात की भी उम्मीद नहीं की जा सकती कि विभिन्न इन्सानी वर्गों में हितों का जो टकराव है और स्वंय इन्सान के भी हित संबन्धित हैं क्या वह उनके बीच न्याय और समता से काम ले सकेगा? इसीलिए ख़ुदा के रब, 'रहमान' और 'रहीम' होने का तक़ाज़ा था कि वह इन्सान को ज़िन्दगी गुज़ारने और जीने मरने का तरीक़ा भी बताए।

इसी तरीक़े की रहनुमाई के लिए हर ज़माने में अल्लाह के नबी और रसूल आते रहे, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जहां पहले इन्सान थे, वहीं इन्सानों के बीच ख़ुदा के पहले पैगम्बर भी थे, यह सिलसिला आख़िरी पैगम्बर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर मुकम्मल हो गया, अल्लाह तआला की तरफ़ से इन्सान के लिए जो क़ानून भेजा जाता रहा उसी को ''शरीअत'' कहते हैं, इन्सान का शुरु का ज़माना चूंकि इल्मी, और सांस्कृतिक परिपूर्ण का नहीं था, इसलिए अल्लाह तआला उसी ज़माने के अनुसार आदेश देते रहे।

पैग़म्बरे इस्लाम सल्ल0 उस ज़माने में तशरीफ़ लाये जब इन्सान अपने तहज़ीबी, तमद्दुनी और इल्मी कमाल व पुख़्तगी के मरहले में क़दम रख चुका था, इसलिए आप सल्ल0 को वह अहकाम (आदेश) दिये गये जो क़यामत तक बाक़ी रहेंगे, जैसे एक इन्सान के जवान होने तक जिस्म में बढ़ौतरी जारी रहती है, और साल डेढ़ साल पर उसके कपड़े तंग होने लगते हैं, लेकिन जब आदमी पूरे तौर पर जवान हो जाये तो अब जिस्म की बढ़ोत्तरी थम जाती है और उस वक़्त जो भी कपड़े सिलवाये आइन्दा छोटे नहीं पड़ते, इसी तरह शरीअते मुहम्मदी उस वक़्त दुन्या में आई जब इन्सान की सलाहियत अपने आख़िरी मरहले पर आ गई, इसीलिए यह शरीअत हमेशा के लिए है और कभी इन्सान उसमें तंग दामनी का एहसास नहीं करेगा, कुरआन की ज़बान में इसी का नाम ''इकमाले दीन'' दीन का पूरा होना, ''इत्माम, नेमत'' नेमत की पूर्ति है। (सूरः माइदा–3)

यही ख़ुदा का भेजा हुआ जीवन व्यवस्था, जो शरीयत इलाही या ''इस्लामी क़ानून'' कहलाता है, यह यूनानी दर्शन शास्त्र के क़ानून की तरह नज़रिया नहीं जिस का ख़्वाब देखा जाता है और उसकी ताबीर कभी देखने में न आई और न यह साम्यवादी जीवन व्यवस्था की तरह कोई ऐसा क़ानून है कि सत्तर साल की मामूली सी मुद्दत उसे बेनाम व निशान कर दे बल्कि यह एक ऐसा संतुलित, मध्यवर्ती और इन्सानी नेचर से सहमत जीवन व्यवस्था है जिसने लगभग एक हज़ार साल एशिया, अफ़्रीक़ा और यूरोप के बड़े हिस्से पर शासन किया है, विभिन्न संस्कृतियों और समाजी इकाइयों का सामना किया है और भलीभांति हर ज़माने के मसायल को हल किया है। दुन्या में जब भी इस क़ानून की परख की गई उसकी उपयोगिता क़ानून फ़ितरत से अनुकूलता और अम्न व सलामती पैदा करने की सलाहियत का एतिराफ़ किया गया है।

दुर्भाग्य वश ख़िलाफ़ते उस्मानिया तुर्की के पतन 1924 ई0 के बाद से इस्लाम की हुक्मरानी का दाइरा मसाजिद और ज़ियादा से ज़ियादा समाजी ज़िन्दगी के कुछ मसायल तक सीमित कर दिया गया। लेकिन आज भी दुन्या के जिन देशों में इस्लामी क़ानून को प्रचलित किया गया वहां लोग उसकी उपयोगिता का एहसास कर रहे हैं और अम्न व सलामती की ठण्डी छाँव यानी इस्लाम की बरकत उनको हासिल है इसी एहसास ने पिछले चन्द बरसों में ख़ासतौर पर एशिया व अफ़रीक़ा में करवट ली है, बाज़ मुल्कों में इस्लामी क़ानून के लागू करने के लिए जनमत का इतना ज़ियादा दबाव पड़ा, जिसे नज़रअन्दाज़ करना संभव नहीं था, वहां क्रमशः उन क़ानूनों को लागू करने की कोशिश की गई। वास्तविक्ता यह है कि इस्लामी शरीअत की वास्तविक दो विशेषता है न्याय, और संतुलन, न्याय से अभिप्राय यह है कि हर आदमी की ज़िम्मेदारी उसकी योग्यता के लिहाज़ से निश्चित की जाये, जैसे देश की सुरक्षा या अम्नो अमान की स्थपना, इस तरह की ज़िम्मेदारी मर्दों से सम्बन्धित होगी क्योंकि वही इसकी क्षमता रखते हैं, इसके विरुद्ध घरेलू ज़िम्मेदारी और बच्चों का पालन पोषण औरतों के ज़िम्मे है क्योंकि वह इन कामों को भलीभांति

अनजाम दे सकती हैं, संतुलन से अभिप्राय यह है कि अधिकार और कर्तव्य के निर्धारण में कमी ज़ियादती न हो जाए, जैसे यदि औरतों के अधिकार का मसअला है, बाज़ क़ौमों ने औरतों को इस दर्जे गिराया कि उनको इन्सानियत के अन्तिम पंक्ति में भी जगह नहीं दी और बाज़ ने इतना ऊँचा उठाया कि जिन ज़िम्मेदारियों का बोझ उठाने की सलाहियत उनमें नहीं थी, वह ज़िम्मेदारियाँ भी उन पर डाल दीं, यही हाल मज़दूरों के बारे में हुआ, कुछ लोगों ने मज़दूरों को पूंजीपतियों का ज़रख़रीद गुलाम बना दिया और कुछ लोगों ने कहा कि शासन मज़दूरों ही का हक़ है, इस कमीबेशी ने हमेशा समाज को नुक़सान पहुँचाया है, शरीअते इस्लामी की मूल विशेषता यही है कि मानव जीवन के हर भाग में उसके क़वानीन न्याय के तक़ाज़े को पूरा करते हैं और कमी ज़ियादती और असंतुलन से पाक हैं। स्वयं हुदूद व क़िसास (हत्यादण्ड) के क़वानीन जो अपराध और सज़ाओं से सम्बन्धित हैं, को न्याय की दृष्टि से देखा जाये तो यह स्वीकार करना पड़ेगा कि अतिसंतुलित और स्वाभाविक क़ानून से सहमत हैं कहा जाता है कि दुन्या कितने ही आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन से गुज़र चुकी है, जो इन्सान बैलगाड़ियों पर सफ़र करता था अब हवा के कांधों पर उड़ता है और समुद्र की तहों में गोते लगाता है, ऐसे प्राचीनकाल के क़ानून इस उन्नतिशील और सभ्य ज़माने के लिए क्योंकर प्रयाप्त हो सकते हैं? लेकिन यह विचार केवल भ्रान्ति पर आधारित है। वास्तव में इन्सान से दो चीज़ें संबंधित हैं, एक उसकी प्रकृति दूसरे वह साधन जो उसके चारों ओर बिखरे हुए हैं, गौर किया जाये तो जो कुछ तबदीलियाँ नज़र आती हैं उन सब का सम्बन्ध साधनों और लोगों की दुन्या से है, इन्सान के नेचर और उसके अन्दरून में कोई परिवर्तन नहीं, पकवान के तरीक़े ज़रूर बदल गये हैं, खाने पीने का ढंग ज़रूर बदला है लेकिन भूख व प्यास जैसे पहले होती थी वैसे अब भी है। इन्सान ने तीर और तलवार की जगह एटम बम और मीज़ाइल बना लिया है लेकिन उसके पीछे जो बदले की भावना और सुरक्षा का प्रयत्न पहले था, अब भी है, यही हाल जीवन के समस्त भागों में है। इस्लामी क़ानून का वास्तविक विषय इन्सानी नेचर है न कि साधन, वह इन्सान की स्वाभाविक इच्छाओं और भावनाओं को कन्ट्रोल करता है और उसका मार्गदर्शन करता है, वह कहता है कि ताक़त का प्रयोग अत्याचार को दूर करने के लिए करो, न कि स्वयं अत्याचार करने के लिए, वह कहता है कि दौलत ग़रीबों के घर चराग़ रौशन करने पर सर्फ़ करो, न कि अपनी बड़ाई को दिखाने के लिए, वह चाहता है कि इन्सान अपनी ज़ेहनी और फ़िकरी क़ूवत इन्सान की सफलता और हित के लिए ख़र्च करे, न कि तबाह कुन, नष्टकारी साधनों के आविष्कार के लिए, वह चाहता है कि प्रसारण साधनों का प्रयोग वास्तविकता को प्रकट करने के लिए हो और सच्चाई की सहायता के लिए हो, न कि सच्चाई को दबाने के लिए और झूठे प्रोपेगण्डे के लिए, इसलिए जैसे–जैसे वसायल व अस्बाब की दुन्या में तरक़्क़ी होती जायेगी।

शेष पृष्ठ....38..पर...

पानी पीने के आदाब

—मौलाना मुहम्मद तक़ी उस्मानी

पहला अदबः बिस्मिल्लाह पढ़ना
दूसरा अदबः बैठ कर पीना
तीसरा अदबः तीन सांस में पीना
चौथा अदबः बरतन मुँह से हटा कर सांस लेना।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पीने की चीज़ को, चाहे वह पानी हो या शरबत उसको तीन सांस में पिया करते थे, फिर सांस लेने की वज़ाहत आगे कर दी कि पीने के दौरान बरतन मुँह से हटा कर सांस लिया करते थे।

दूसरी हदीस अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 से रिवायत है, वह फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया, पीने की किसी भी चीज़ को ऊँट की तरह एक ही मरतबा में न पिया करो, यानी एक ही सांस में एक ही मरतबा आदमी ग़ट–ग़ट करके पूरा गिलास हलक़ में उंडेल दे, यह सही नहीं। और इस अमल को ऊँट के पीने से उपमा दी, इसलिए कि ऊँट की आदत यह है कि वह एक ही मरतबा में सारा पानी पी जाता है, तुम उसकी तरह मत पियो, बल्कि तुम जब पानी पियो तो दो सांस में पियो या तीन सांस में पियो और जब पानी पीना शुरु करो तो अल्लाह का नाम ले कर और बिस्मिल्लाह पढ़ कर शुरु करो, यह नहीं कि केवल ग़ट–ग़ट करके पानी हलक़ से उतार लिया।

मेरे वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब रह0 की एक छोटी पुस्तिका है जिसका नाम है ''बिस्मिल्लाह के फ़जाएल व मसाएल'' इस छोटी सी किताब में इल्म व ज्ञान का दरयाबन्द है, अगर उसको पढ़े तो इन्सान की आँखें खुल जायें इसमें वालिद साहब रह0 ने यही बयान फ़रमाया है कि यह पानी जिसको तुमने एक लमहे के अन्दर हलक़ से नीचे उतार लिया उसके बारे में ज़रा यह सोचो कि यह पानी कहाँ था? और तुम तक कैसे पहुँचा?

पानी का ख़ुदाई निज़ाम का करिशमाः—

अल्लाह तआला ने पानी का सारा ज़ख़ीरा (स्टाक) समन्दर में जमा कर रखा है और इस समन्दर के पानी को खारा बनाया, इसलिए कि अगर उस पानी को मीठा बनाते तो कुछ दिनों बाद यह पानी सड़ कर ख़राब हो जाता, इसलिए अल्लाह तआला ने इस पानी के अन्दर ऐसे नमकियात रखे कि रोज़ाना लाखों जानवर उसमें मर जाते हैं, इसके बावजूद उसमें कोई ख़राबी और कोई परिवर्तन पैदा नहीं होता उसका ज़ाएक़ा (स्वाद) नहीं बदलता, ना उसके अन्दर कोई सड़न पैदा होती है, फिर अगर तुमसे यह कहा जाता कि जब पानी की ज़रूरत हो तो समन्दर से हासिल कर लो और इसको पी लो, तो इन्सान के लिए कितना दुशवार हो जाता, इस लिए कि पहले हर इन्सान का समुद्र तक पहुंचना कठिन है दूसी ओर वह पानी इतना खारा है कि एक घूँट भी हलक़ से उतरना मुशकिल है,

इसलिए अल्लाह तआला ने यह इन्तिज़ाम फ़रमाया कि उस समुद्र से मानसून के बादल उठाये और फिर अजब कुदरत का करिशमा है कि उस बादल के अन्दर ऐसी आटोमेटिक मशीन लगी हुई है कि जब वह बादल समुद्र से उठता है तो उस पानी की सारी नमकियात नीचे रह जाती हैं और केवल मीठा पानी ऊपर उठ कर चला जाता है और फिर अल्लाह तआला ने ऐसा नहीं किया कि साल में एक मरतबा बादलों के ज़रिये सारा पानी बरसा देते और यह फ़रमाते कि तुम यह पानी अपने पास जमा कर लो और स्टाक कर लो, हम सिर्फ़ एक मरतबा पानी बरसा देंगे, तो इस सूरत में वह बरतन और टंकियाँ कहां से लाते जिनके अन्दर तुम इतना पानी जमा कर लेते जो तुम्हारे साल भर के लिए काफ़ी हो जाता, बल्कि अल्लाह तआला कुरआन करीम में इरशाद फ़रमाते हैं किः ''फ़–अस्कन्नाहु फ़िल अर्ज़'' (सूरः मोमिनून–18)

यानी हमने पहले आसमान से पानी बरसाया और फिर उसको ज़मीन के अन्दर बिठा दिया और जमा कर दिया, उसको इस तरह बिठाया कि पहले पहाड़ों पर बरसाया और फिर उसको बर्फ़ की शकल में वहां जमा दिया और तुम्हारे लिए वहां एक कुदरती फ़िरीज़र बना दिया, अब पहाड़ की चोटियों पर तुम्हारे लिए पानी सुरक्षित है और ज़रूरत के समय वह पानी पिघल–पिघल पर दरयाओं द्वारा ज़मीन के विभिन्न क्षेत्रों में पहुंच रहा है और फिर दरयाओं से नहरें और नदयां निकलीं और दूसरी ओर धरती की नाड़ियों द्वारा कुओं तक पानी पहुंचा दिया। अतः अब पहाड़ों की चोटियों पर पानी का स्टाक भी मौजूद है, और सप्लाई लाइन द्वारा एक एक आदमी तक पानी पहुंच रहा है। अब अगर सारी दुन्या के साइंसदाँ और इंजीनियर मिल कर भी इस तरह पानी की सप्लाई का इन्तिज़ाम करना चाहते तो इन्तिज़ाम नहीं कर सकते थे, लिहाज़ा जब पानी पियो तो ज़रा ग़ौर कर लिया करो कि अल्लाह तआला ने किस प्रकार अपनी विशाल कुदरत और गहरी हिकमत द्वारा यह पानी का गिलास तुम तक पहुंचाया और इसी बात की ओर याद दहानी के लिए कहा जा रहा है कि जब पानी पियो तो ''बिस्मिल्लाह'' करके पानी पियो।

पूरी सल्तनत की क़ीमत एक गिलास पानीः–

बादशाह हारून रशीद एक मरतबा शिकार की तलाश में घूम रहे थे, घूमते घूमते रास्ता भटक गये, और ''ज़ादे राह'' रास्ते का खाना पानी ख़त्म हो गया और प्यास से बेताब हो गये, चलते चलते एक झोपड़ी नज़र आई, वहां पहुचे, वहां जा कर झोपड़ी वाले से कहा कि ज़रा पानी पिला दो वह कहीं से पानी लाया और हारून रशीद ने पानी पीना चाहा तो उस शख़्स ने कहा, अमीरुलमोमिनीन, ज़रा एक लमहा ठहर जाइये, पहले यह बताएं कि यह पानी जो इस वक़्त मैं आपको दे रहा हूं, यदि यह न मिलता और प्यास उतनी ही शदीद होती जितनी इस वक़्त है, तो बताइये, इस एक गिलास पानी की क्या क़ीमत लगाते और उसके प्राप्त करने पर कितनी रक़म ख़र्च कर देते? हारून रशीद ने कहा कि यह प्यास तो ऐसी चीज़ है कि अगर इन्सान को पानी न मिले तो इसकी वजह से बेताब हो जाता

है और मरने के क़रीब हो जाता है, इसलिए मैं एक गिलास पानी प्राप्त करने के लिए अपनी आधी सलतनत दे देता। उसके बाद उसने कहा कि अब आप इस पानी को पी लें। हारून रशीद ने पानी पी लिया, उसके बाद उस शख़्स ने हारून रशीद से कहा, अमीरुलमोमिनीन! एक सवाल का और जवाब दे दें, उन्होंने पूछा क्या सवाल है? उस शख़्स ने कहा कि अभी आपने जो एक गिलास पानी पिया है, अगर यह पानी आपके शरीर के अन्दर रह जाये और बाहर न हो, पेशाब न आये तो उसको बाहर निकालने के लिए क्या ख़र्च कर देंगे? हारून रशीद ने जवाब दिया कि यह तो पहली मुसीबत से भी ज़ियादा बड़ी मुसीबत है कि पानी अन्दर जा कर बाहर न हो और पेशाब बन्द हो जाये, इसको ख़ारिज करने के लिए भी मैं आधी सल्तनत दे देता, उसके बाद उस शख़्स ने कहा कि आप की पूरी सल्तनत की क़ीमत केवल एक गिलास पानी का अन्दर ले जाना और उसको बाहर लाना है, और यह पानी पीने और उसके बाहर निकालने की नेमत सुब्ह से शाम तक कई मरतबा आपको हासिल होती है, कभी आपने इस पर ग़ौर किया कि अल्लाह तआला ने कितनी बड़ी नेमत दे रखी है।

इसलिए यह जो कहा जा रहा है कि ''बिस्मिल्लाह'' पढ़ कर पानी पियो, इससे उसी ओर मुतवज्जेह (आकृष्ट) किया जा रहा है, कि यह पानी का गिलास जो तुम पी रहे हो, यह अल्लाह तआला की कितनी बड़ी नेमत है, और इस तवज्जुह के नतीजे में अल्लाह तआला इस पानी को तुम्हारे लिये इबादत बना देंगे।

❖❖❖

इस्लामिक विधान.....

इस्लामी क़ानून की अहमियत और आवश्यकता भी उसी अनुपात से बढ़ती जायेगी, यही वजह है कि आज दुन्या का कोई क़ानून नहीं जो इस्लाम से लाभान्वित न हुआ हो, ख़ास कर समाजी क़ानून में तो इस्लामी क़ानून से इतना फ़ाइदा उठाया गया है कि उसका शुमार नहीं, और यह भी एक हक़ीक़त है कि जहाँ कहीं और जिस क़दर इस्लामी शरीअत से मुंह मोड़ा गया और घृणा का रास्ता अपनाया गया, वहां उसी क़दर लोग कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं।

इसलिए इस्लामी शरीयत एक रहमत है न कि ज़हमत, इससे न किसी को ख़तरा है और न दुन्या को अन्देशों, और आशंकाओं में पड़ने की ज़रूरत है, इस्लाम मुकम्मल रहमत और अम्न व सलामती है, मुसलमानों के लिए भी, मुस्लिम देशों की ग़ैर मुस्लिम अल्पसंख्यकों के लिए भी और उनके पड़ोसियों के लिए भी। ख़ुदा करे कि कुछ मुस्लिम देश इस बात के लिए तैयार हों कि वह अपनी ज़मीन पर सिर्फ़ ख़ुदा की रज़ा के लिए क़ानूने शरीअत को उसकी तमाम विशालता के साथ मसलहत और हिकमत की रिआयत करते हुए लागू करें, अगर वाक़ई उन्होंने ऐसा कर लिया तो यह एक ऐसा तजुरबा होगा जिससे दुन्या सबक़ लेगी और बहुत सी ज़बानें जो केवल शत्रुता और ईर्ष्या से खुलती हैं गुंग हो जायेंगी, उनके पास विरोध का औचित्य या बौद्धिक तर्क नहीं होगा।

❖❖❖

अल्लाह का डर

—नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

दुकान मालिक ने आदेश दिया कि जो जैतून का तेल कनस्तर में है, सब फेंक दो, हेल्पर को बात समझ में न आई, लेकिन मालिक ने सख्ती से आदेश दिया तो चूँ–चेरा का सवाल ही कहाँ? अंततः आदेश का पालन हुआ और सारा का सारा तेल ज़मीन पर बहा दिया गया।

हमारे हिन्दुस्तान में ज़ैतून का तेल बहुत महंगा मिलता है, अरब के इलाक़ों में बहुत महंगा तो नहीं मगर काबिले क़द्र दाम तो है ही। नौकर ने जो ज़ैतून का तेल बहाया तो उसका दाम उस समय चालीस हज़ार दिरहम था। इकानोमी की जानकारी रखने वाले मौजूदा दौर में उसकी क़ीमत का सहज अन्दाज़ा लगा सकते हैं।

तेल बहाने का आदेश देने वाले हज़रत इब्ने सीरीन रह0 थे। ये इब्ने सीरीन रह0 व्यापारी थे। दीन–धर्म की सेवा के साथ–साथ व्यापार को भी बखूबी अंजाम देते।

हज़रत इब्ने सीरीन रह0 इराक के बसरा शहर के रहने वाले थे उन्होंने अंतिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विशेष सेवक व प्रसिद्ध सहचर (सहाबी) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 की निगरानी में रह कर ज्ञान की प्राप्ति की बल्कि उनके घर में आखें खोली। इसके अतिरिक्त उन्होंने हज़रज अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0, हज़रत अबुहुरैरह, अबू सईद खुदरी रज़ि0, हज़रत हसन रज़ि0 और हज़रत जैद बिन साबित रज़ि0 जैसे बड़े सहाबी से ज्ञान प्राप्त किया। इससे बात समझ में आती है कि उनका ज्ञान कितने उच्च स्तर का था। ख्वाब की ताबीर (स्वप्न फल) में इब्ने सीरीन रह0 को जो महारत हासिल थी वह कम ही लोगों के हिस्से में आयी।

इब्ने सीरीन रह0 अल्लाह से बहुत डरने वाले लोगों में शुमार थे, ऐसा कहा जाता था कि उनके समय में बसरा शहर में इन जैसा अल्लाह वाला शायद ही कोई रहा हो। वह एक बड़े आलिम थे, जब उनसे हराम हलाल का मसला पूछा जाता तो उनके चेहरे का रंग बदल जाता। मौत का जब ज़िक्र छिड़ता तो उनका जिस्म बेजान सा हो जाता। कई मजलिसों में देखा गया कि यदि मौत का ज़िक्र छिड़ता तो बेसुध हो जाते। लोगों को शक हो सकता है कि वह शायद मौत से डरते थे् अरे नहीं भाई! वह मौत से नहीं बल्कि अल्लाह से डरते थे कि पता नहीं मरने के बाद अल्लाह हमारे साथ क्या मामला करे। इस्लाम के तीसरे खलीफ़ा हज़रत उस्मान रज़ि0 के सामने जब क़ब्र का ज़िक्र छिड़ता तो बच्चों की तरह सिसक–सिसक इतना रोते कि दाढ़ी आंसुओं से तर हो जाती।

इसी तरह दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर रज़ि0 के बारे में आता है कि जब उनका अंतिम समय आया तो वह अपने बेटे की गोद में सर रख कर लेटे हुए थे, अनायास अपने बेटे से कहा, मेरे सर को ज़मीन पर रख दो,

बेटे ने कहा, नहीं अब्बा! यही ठीक है। लेकिन जब बाप ने ज़ियादा ज़ोर दिया तो बेटे ने उनके सर को ज़मीन पर रख दिया। अब हज़रत उमर रज़ि0 ने जो किया वह इबादतों और कारनामों पर घमण्ड करने वालों के लिए नसीहत है कि सहसा हज़रत उमर रज़ि0 अपने गालों को ज़मीन पर घसीटने लगे, लोगों ने उन्हें रोका और कहा, हज़रत! ऐसा आप क्यों कर रहे हैं? कहने लगे कि शायद मेरी यही अदा अल्लाह को पसन्द आ जाए और मुझे बख्श दे।

खैर! बात हो रही थी, इब्ने सीरीन रह0 की वह जो ज़ैतून का तेल बहा देने का आदेश था, उसका कारण था कि जब सुबह दुकान खोली तो ज़ैतून के तेल में एक चूहा मरा पाया, वह तेल कोई छोटे–मोटे वर्तन में नहीं, निश्चित रूप से कनस्तर था, पीपे में रखा होगा। इब्ने सीरीन रह0 चाहते तो चूहे को निकाल कर आराम से बेचते, कौन देखने और पूछने वाला था, मगर अल्लाह के ख़ौफ़ ने उन्हें इस कृत्य से रोके रखा।

इस्लाम में शुद्धता और स्वच्छता पर खूब ध्यान दिया गया है। सामग्री में कोई घालमेल न हो उसकी तरफ़ डराया गया है। हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के दौर में एक व्यक्ति गेहूँ बेच रहा था। आपने गेहूँ के ढेर के अन्दर हाथ डाला तो गेहूँ भीगा पाया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसे पसन्द न किया और कहा कि इस भीगे हुए अनाज को तुमने ढेर के ऊपर क्यों न रहने दिया ताकि खरीदने वाले लोग इसको देख सकते। जो आदमी धोखेबाजी करे वह हममें से नहीं है।

❖❖❖

ऐकता का संदेष्टा .....

इस प्रकार पवित्र कुरआन पर आस्था रखने वाले मुसलमान विवश हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से पूर्वकाल के उन सभी ग्रंथों को जिनके नाम कुरआन से ज्ञात हुए विस्तार पूर्वक एवं जिनके नाम ज्ञात नहीं हुए सिद्धान्ततः ईशवाणी मानें। अतः ऐसे आदि ग्रंथों को जिनमें ईश्वरीय शिक्षा की विशेषता झलकती हो अस्वीकार न करें, भले ही उनका नाम कुरआन में सम्मिलित न हो। क्योंकि ऐसे ग्रंथों का ईशवाणी होना सम्भव है, लेकिन पूर्ण विश्वास के साथ इसका निर्णय नहीं किया जा सकता क्योंकि कुरआन ने इनके नामों से अवगत नहीं कराया है।

इस विस्तृत चर्चा से ज्ञात होगा कि इस्लाम ने संसार के समस्त सत–धर्मों को एक ही माना है अलग अलग नहीं। क्योंकि अल्लाह जो इन सब शिक्षाओं का स्रोत है एक ही है। समस्त दूत एवं संदेष्टा जो इस स्रोत से लाभांवित हुए सब का उद्धेश्य एक ही था। निष्कर्ष यह कि सब का ईश्वर एक, सभी की शिक्षा एक। अतः इन संदेष्टाओं द्वारा प्रस्तुत समस्त ग्रंथ और आदेश जो दुन्या को मिले निःसन्देह एक ही थे। इस वास्तविकता का पवित्र कुरआन में कई स्थानों पर स्पष्ट उल्लेख किया गया है। इस प्रकार इस्लाम उसी सनातन अथवा शाश्वत धर्म का नाम है जो हज़रत आदम अलै0 से लेकर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 तक समय समय पर ईशदूतों द्वारा प्रस्तुत किया जाता रहा है और उसकी शिक्षा मानव जाति को दी जाती रही।

.....जारी.....

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ ۔ ٹیگور مارگ
لکھنؤ ۔ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक ________ ________ تاریخ

अहले खैर हज़रात से!

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम की सरपरस्ती में दारुल उलूम नदवतुल उलमा अपनी इल्मी व दीनी तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंजाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों एवं नियमों को सीने से लगाये हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था, यानी नये ज़माने में इस्लाम की मुअस्सिर और सही तर्जुमानी, दीन व दुन्या की व्यापकता और इल्म व रुहानियत के एकता की कोशिश, फितन–ए–लादीनियत और ज़ेहनी इरतिदाद का मुकाबला, इस्लाम पर एतिमाद और उलूमेइस्लामिया की बरतरी व इम्तियाज़ का ऐलान व इज़हार, दीने हक से वफादारी और शरीअत पर इस्तिक़ामत।

आपसे हमारी अपील है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत को समझते हुए पूरी फराख़दिली, फ़य्याज़ी और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर तआउन व मदद फरमायें कि हिन्दुस्तान में दीन के किलों की हिफ़ाज़त का इससे बेहतर रास्ता और इससे ज़ियादा पायदार कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

जैसा कि आप को मालूम है कि रमज़ानुल मुबारक के मौक़े पर दारुल उलूम नदवतुल उलमा के असातिज़ा, सुफ़रा व मुहस्सिलीन आप हज़रात की ख़िदमत में हाज़िर हो कर सद्क़ात व जक़ात व चन्दे की वसूलयाबी का काम अंजाम देत हैं लेकिन इस वक़्त पूरे मुल्क में क्रोना वायरस की वजह से लॉकडाउन है, ऐसे हालात में सफ़र करना ना मुम्किन है इसलिए आप के चन्दे की वसूलयाबी बैंक द्वारा ही मुम्किन है।

इसलिए आप हज़रात से अपील है कि अपने सद्क़ात व अतियात चेक/ड्राफ्ट और ऑन लाइन, नदवतुल उलमा के खातों में भेजें ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में नदवतुल उलमा के साथ आप का तआउन निहायत अहमियत रखता है, अल्लाह तआला हम सब की कोशिशों को कबूल फ़रमाये और उनको हमारे लिए ज़ख़ीर–ए–आख़िरत बनाये। आमीन

मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी
नाजिरे आम नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **7275265518** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
A/C No. 10863759711 (अतियात)
A/C No. 10863759766 (ज़कात)
A/C No. 10863759733 (तअ़मीर)
SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

उर्दू सीखये —इदारा

नीचे लिखे उर्दू के जुमले पढिये,
मुश्किल आने पर बाद में लिखे हिन्दी जुमले से मदद लीजिए

فرض ہیں نمازیں پانچ وقت کی
پڑھو نمازیں پانچ وقت کی
فجر و ظہر وعصر و مغرب
عشاء رات کی بعد از مغرب
ملے توفیق تو تہجد پڑھ لو
ممکن ہو تو اشراق پڑھ لو
تلاوت روزانہ کرو
پیارے نبی پر درود پڑھو
یا رب نبی پر لاکھوں سلام
ان کی آل اوراصحاب پربھی سلام

फ़र्ज हैं नमाज़ें पाँच वक़्त की
पढ़ो नमाज़ें पाँच वक़्त की
फ़ज्रो जुह्रो अ़स्रो मग़रिब
ईशा रात की बाद अज़ मग़रिब
मिले तौफ़ीक़ तो तहज्जुद पढ़ लो
मुम्किन हो तो इ़शराक़ पढ़ लो
तिलावत रोज़ाना करो
प्यारे नबी पर दुरूद पढ़ो
या रब नबी पर लाखों सलाम
उनकी आल और अस्ह़ाब पर भी सलाम